चन्दामामा
जुलाई १९९२
4

C for Clown, for Caramilk. C for Cowb

Cara or Clown, C Caramilk. C

Cool, amilk. C Clown, C for

mil Cool, C for Car k. C for C

fo milk. C for Cool, C f ramilk.

Cov y, C for Caramilk. C for C , C fo

milk. C for Cowboy, C for Carami C f

for Caramilk. C for Cowboy, C for Caram

Clown, or Caramilk. C for Cowboy, C f

milk. C Clown, C for Caramilk. C for

for C C for Clown, aramil

Cool, Caramilk. n, C for

milk. f Cool, C for C milk. C for C

for rami C for Cool,

Cowboy, C for Caramilk.

CARAMILK

CARAMILK

Parry's

HTA 8194.

New Volfarm Jam is made just for kids.
So, naturally, it's made just the way kids like it.
With the yummiest, juiciest fruits. (Slurp, slurp!)
Tell all those adults to keep their hands off it!

JAMS

MIXED FRUIT PINEAPPLE

Ogilvy & Mather 90

नई
उमर के
नये रंग
मौज ही मौज
स्कूल में आए
नए फ़ेविक्रिल
स्टूडेंट पोस्टर कलर्स
ऐसा रंग जमाएं
रंग मुलायम उ़भरा-उभरा
तोता–हरा-हरा लगे खरा
चटख लाल, नीला,
चमकीला
सफेद निराला
ज्यों बर्फीला
हर रंग अलबेला
तो झटपट चित्रों में रंग भरो
नए फेविक्रिल स्टूडेंट
पोस्टर कलर्स के संग
मौज करो !
मुफ़्त
पेंट-ए-पोस्टर
नए
फ़ेविक्रिल®
स्टूडेंट
पोस्टर कलर्स
मुफ़्त
STUDENTS' POSTER COL
Fevicry
नाम :
उम्र :
पता :
स्कूल
फ़ेविक्रिल पेंट-ए-पोस्टर

चन्दामामा

जुलाई १९९२

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

मूल्यपरक शिक्षा

जुलाई आ गयी है और हम देखते हैं कि विद्यार्थीगण नये सत्र के लिए अपने स्कूलों और कालेजों में लौट आये हैं । आजकल हमें दो-एक शब्द अक्सर सुनने को मिलते हैं-जैसे मूल्यपरक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा । क्या इन दोनों में कोई अंतर है? अगर है तो क्या है?

यदि हम ऐसी शिक्षा-पद्धति का विकास कर सकें जिससे चरित्र का निर्माण हो, जो मानसिक शक्ति को दृढ़ करे और साथ-साथ इसे बढ़ाये भी, जो बुद्धि को पैना करे जिससे व्यक्ति अपने पांव पर खड़ा हो सके, तो वह शिक्षा-पद्धति पहली उक्ति के अनुरूप होती ।

इसके विपरीत व्यावसायिक शिक्षा पहले हमें कोई व्यवसाय या काम चुनने को कहेगी । दूसरे, हमने जो भी धंधा अपनाया है, उसकी वृद्धि में लग जाने को कहेगी, और अपनी खातिर तथा समाज की खातिर चाहेगी कि हम इसमें सबसे आगे रहने की कोशिश करें ।

यदि इन दोनों उक्तियों के बीच कोई अंतर है तो वह बाल के समान महीन है, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपना व्यवसाय बढ़ाकर उसे आगे ले जाता है, अपने चरित्र का विकास करता है, अपनी नैतिक शक्ति जुटा चुका है, अपनी बुद्धि प्रखर बनाता है, तो ये सब गुण उसके काम आयेंगे । इससे वह उस समुदाय का एक आदर्श सदस्य बन जायेगा जिसमें वह रहता है । वह अपने समाज का एक आदर्श मित्र बनेगा और साथ ही अपने देश का भी एक आदर्श नागरिक बनेगा ।

वर्ष : ४४ जुलाई १९९२ अंक : ११
एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

MAGGI
CLUB
FUN LOVERS
मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार
गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.
अब मौज-मस्ती भरे
साहसिक खेल!
मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!
बस यह लोगो मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.
अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे.
हमारा पता है
मैगी क्लब
पो.ओ. बॉक्स 5748, नई दिल्ली-110 055
'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज़ पुस्तिका!
हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी
'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज़ पुस्तिका.
MAGGI
2-minute noodles
एक और मौका: अगर अभी तक तुमने मैगी 'बर्डहाउस' नहीं लिया है तो तुरन्त ले लो!
HTA 7778HIN

नया देश : पुराना नाम

२७ अप्रैल को युगोस्लाव परिसंघ संसद ने अपना एक विशेष सत्र बुलाया और उसमें संसार के लगभग ५० राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में नये संविधान की घोषणा की। उन राष्ट्रों में भारत भी शामिल था।

युगोस्लाविया के परिसंघ गणतंत्र में अब केवल दो ही गणतंत्र बचे हैं। पहले इस परिसंघ में छह गणतंत्र थे। ये दो गणतंत्र सर्बिया और मांटेनेग्रो हैं। क्रोशिया और स्लेवानिया इस परिसंघ से पिछले वर्ष हट गये थे जिससे जातिवादी हिंसा भड़की, जो छह महीने तक चलती रही। क्रोशिया में अनेक लोग मारे गये, अनेक बेघर हो गये, और उससे भी अधिक को पड़ोस के गणतंत्रों में भाग कर शरण लेनी पड़ी। यूरोपीय समुदाय की मध्यस्थता के कारण यहां लगभग १५ बार शांति-समझौते हुए, लेकिन कुछ ही दिनों में, या कहें कि कुछ ही घंटों में, उनका उल्लंघन होता रहा। आखिर संयुक्त राष्ट्र इन दंगे वाले गणतंत्रों में शांति सेना भेजने के लिए राज़ी हो गया। मार्च के शुरू में भारत के ले. जनरल सतीश नंबियार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा सेना के प्रमुख बनकर युगोस्लाविया में पहुंचे। इस सेना में चौदह हज़ार सैनिक थे जो लगभग १७ देशों से मांगे गये थे।

इसी बीच मुस्लिम-बहुल बोसनिया-हर्ज़ेगोविना में मतगणना हुई। इसमें लोगों ने बोसनिया की संप्रभुता के हक में मत दिया। इससे हर्ज़ेगोविना को काफी परेशानी हुई। परिणामस्वरूप मुस्लिम और क्रोट एक तरफ हो गये और सर्ब लोग एक तरफ,और दोनों के बीच बार-बार टक्कर होती रही। संयुक्त राष्ट्र ने यह सब देखते हुए साफ कह दिया है कि फिलहाल वह शांति बनाये रखने के अपने प्रयासों को बोसनिया तक विस्तार नहीं दे सकता।

छठे गणतंत्र मेसेडोनिया ने भी अलग होने के अपने निर्णय की घोषणा कर दी थी। अब वह क्रोशिया, स्लोवानिया और बोसनिया-हर्ज़ेगोविना के साथ-साथ इस बात का इंतज़ार कर रहा है कि कब यूरोपीय समुदाय उसे मान्यता दे।

मौजूदा द्विराष्ट्रीय परिसंघ गणतंत्र बीसवीं शताब्दी में 'तीसरा' युगोस्लाविया है। १९१७ में कोरफू के समझौते के अनुसार (पहले विश्वयुद्ध १९१४-१९१८ के दौरान) सभी युगोस्लाव लोगों

को युद्ध के बाद एक हो जाना था ताकि वे सर्ब, क्रोट और स्लोवीन राज्य स्थापित कर सकें। यह घोषणा दिसंबर, १९१८ को हुई थी। १९२९ में यह नाम बदल कर युगोस्लाविया कर दिया गया। १९४१ में दूसरे महायुद्ध के शुरू होने के दो साल बाद हिटलर वाले जर्मनी ने युगोस्लाविया पर हमला कर दिया। तब मार्शल टीटो आगे आये और उन्होंने युगोस्लाविया को मुक्ति दिलाकर उसे एक साम्यवादी परिसंघ गणतंत्र बना दिया। स्वयं वह प्रधानमंत्री बन गये और फिर १९५३ में राष्ट्रपति बना दिये गये। १९७४ में इस देश ने नया संविधान अपनाया जिसमें छह गणतंत्रों ने मिलकर समाजवादी परिसंघ का गठन किया। १९८० में मार्शल टीटो का देहांत हो गया और देश में प्रादेशिक तनाव और आर्थिक कठिनाइयों के कारण अनिश्चितता आ गयी। इसके साथ ही वहां सशस्त्र सेनाएं सत्ता में आ गयीं और उन्होंने जातिवादी झगड़ों में दखलंदाज़ी शुरू कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि वहां गृहयुद्ध का वातावरण बन गया। सर्बिया और मांटेनेग्रो के इन दो गणतंत्रों में पहले परिसंघ की जनसंख्या का ४४ प्रतिशत बसता है और प्राकृतिक संसाधन ५० प्रतिशत हैं। इसलिए आर्थिक दृष्टि से नये राज्य के पास काफी क्षमता है।

विश्व की आंखें अब नये युगोस्लाविया पर लगी हुई हैं। वह अब यही देख रहा है कि वहां स्थायी शांति की क्या संभावनाएं हैं।

वर का चुनाव

विशाल और मालती के मैथिली नाम की एक बेटी थी । वह उनकी अकेली संतान थी । मैथिली तेज़ थी, बुद्धिमान थी । अपने माता-पिता की जायदाद की अकेली हकदार थी । इसलिए हर कोई उसे अपनी बहू बनाने की फ़िराक में था । लेकिन किसी ने अपने मन की बात उन तक प्रकट नहीं होने दी, क्योंकि विशाल की निकट की रिश्तेदारी में ही तीन ऐसे युवक थे जो हर तरह से मैथिली के योग्य दिखते थे ।

उन तीन युवकों का नाम था जानकीराम, सूर्यदेव तथा चंद्रकांत । तीनों युवकों की माताएं मैथिली को अपने यहां बहू बनाकर लाना चाहती थीं । वैसे जानकीराम की तुलना में सूर्यदेव और चंद्रकांत कहीं ज़्यादा अमीर थे, और सूर्यदेव तथा चंद्रकांत के बीच चंद्रकांत काफी सुंदर था । इसलिए मैथिली की मां, मालती, चाहती थी की मैथिली का विवाह चंद्रकांत से ही हो ।

एक दिन विशाल ने अपनी बेटी से कहा, "बेटी, जानती हो तुम से शादी करने को जानकीराम, सूर्यदेव और चंद्रकांत, तीनों तैयार हैं, और उनकी माताएं भी इसी इंतज़ार में हैं कि तुम कब उनके घर में बहू बनकर जाओ । मैं तो यही चाहूंगा कि इस मामले में तुम स्वयं ही निर्णय लो । जैसा तुम्हारा निर्णय होगा, मैं उसके अनुसार चलूंगा ।"

पिता की बात सुनकर मैथिली लजा गयी । बोली, "मैं निर्णय कैसे ले सकती हूं? मैंने तो कभी उनसे ढंग से बात भी नहीं की ।"

बेटी की बात सुनकर विशाल कुछ देर सोचता रहा । फिर बोला, "दस दिन बाद दीवाली है । मैं सोच रहा हूं इस मौके पर उन तीनों को अपने यहां बुला लूं । फिर तुम किसी निर्णय पर पहुंच सकोगी ।"

बेटी ने जब हामी भर दी तो विशाल

इंदु अग्रवाल

ने उन तीनों को अपने यहां आने का निमंत्रण भिजवा दिया । अगले दिन ही वे तीनों युवक उनके यहां आ पहुंचे ।

त्योहार के दिन वे तीनों युवक सुबह-सुबह उठे, नहाये-धोये और विशाल द्वारा दिये गये नये वस्त्र पहनकर तैयार हो गये । इतने में गली में चमेली के फूल बेचनेवाली एक लड़की की आवाज़ सुनाई दी । आवाज़ सुनकर मैथिली फाटक के पास गयी ।

वहीं पास में वे तीनों युवक भी खड़े थे । उनमें से सूर्यदेव बोला, "अरे, घर के चारों ओर फूल ही फूल हैं । तब ये फूल खरीदने की क्या ज़रूरत है?"

इससे पहले कि मैथिली कुछ बोलती, जानकीराम ने हंसकर कहा, "बेशक, घर में, और घर के चारों तरफ फूल ही फूल हैं । पर मुझे चमेली के फूल कहीं दीख नहीं पड़े । लेने दो उसे ।" और फिर फूल वाली उस लड़की से बोला, "दे दो जितने यह कहती है ।" और उसने जेब से पैसे निकाले ।

फूल वाली लड़की फूल देने को ही थी कि चंद्रकांत बोल उठा, "अरे, इत्ते से फूलों से क्या होगा । इससे दुगुने दो ।" और फिर उसने जानकीराम की ओर व्यंग्यपूर्ण ढंग से देखते हुए कहा, "त्योहार का मौका है । ऐसे मौके पर भी कंजूसी । भई, लेने ही हैं तो दिल खोलकर लो ।" और उसने पैसे देकर फूलवाली को रवाना कर दिया ।

चंद्रकांत की बात पर जानकीराम ने किसी तरह का मलाल ज़ाहिर नहीं किया ।

मैथिली ने तीनों की बातें सुनीं । वह केवल धीमे से मुस्करा दी और फूल लेकर घर के भीतर चली गयी ।

थोड़ी देर बाद वहां अपनी गठरी के साथ साड़ियां बेचने वाला चला आया । विशाल हमेशा उसी से साड़ियां लेता था । पर आज उसे ताज्जुब हुआ । बोला, "त्योहार के लिए तो हमने साड़ियां ले ली थीं । अब और क्या लेकर आये हो?"

"इधर कुछ नयी साड़ियां आ गयी थीं," साड़ी वाला बोला, "मैंने सोचा आपको दिखाता चलूं । मैथिली बेटी साड़ियों की बहुत शौकीन है न ।"

इससे पहले कि विशाल उसे कुछ उत्तर

देता, चंद्रकांत ने साड़ी वाले को रोकते हुए कहा, "देखें तो, कैसी हैं साड़ियां ।"

साड़ीवाले की आवाज़ मैथिली के कानों में भी पड़ी । वह भी वहां आ गयी । चंद्रकांत बोला, "यह कहता है कुछ नयी साड़ियां आयी हैं । चलो, कोई पसंद करो ।"

"परसों ही तो हमने इससे दो साड़ियां ली थीं । अब और साड़ियों का क्या करेंगे?" मैथिली ने अपनी राय जतलाते हुए कहा ।

इस पर चंद्रकांत हंसते हुए बोला, "एक मेरी ओर से । इसे मेरी ओर से भेंट समझो ।"

अब जानकीराम भी बोले बिना रह न सका । कहने लगा, "जब मैथिली ने त्योहार के मौके पर दो नयी साड़ियां ली हैं, तब वह एक और साड़ी लेकर क्या करेगी? अच्छा हो, इस पैसे से कुछ और खरीदा जाये । एक ही तरह की चीज़ पर पैसे खर्च करने से क्या फायदा?"

"कुछ और खरीदने की बात बाद में सोचेंगे । पहले मुझे एक साड़ी खरीदने दो" चंद्रकांत ने यह कहते हुए उन साड़ियों में से एक कीमती साड़ी चुन ली ।

खैर मैथिली को भी वह साड़ी पसंद आयी, इसलिए चंद्रकांत ने साड़ी वाले के पैसे चुकता कर दिये और फिर जानकीराम की तरफ बड़े ग़रूर से देखने लगा ।

इस घटना के कुछ ही देर बाद जानकीराम, सूर्यदेव और चंद्रकांत, तीनों बाज़ार गये । वापस आये तो जानकीराम के हाथ में

एक काव्य संग्रह था जो उसने मैथिली की ओर बढ़ा दिया ।

उस संग्रह को देखकर मैथिली चौंक उठी और कहने लगी, "अरे, आपको कैसे पता चला कि मुझे यह कविता संग्रह पसंद है?"

"तुम सुबह पड़ोस की एक लड़की से कह रही थी न कि तुम्हें यह काव्य संग्रह ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल पाया, और तुम्हें इस कवि की कविताएं बहुत पसंद हैं । इत्तफाक से मुझे बाज़ार में यह संग्रह दिख गया और मैंने उसे तुरंत खरीद लिया । यह मेरी ओर से तुम्हारे लिए तुच्छ भेंट है । कृपया इसे स्वीकार करो ।" जानकीराम ने कहा ।

शाम हुई तो दीवाली का उत्सव मनाया जाना शुरू हो गया जो काफी देर तक चलता

रहा । फिर रात का भोजन हुआ । लेकिन इतने में मैथिली के कानों से कोई आवाज़ टकरायी । वह आवाज़ पिछवाड़े से आयी थी । उसे सुनकर मैथिली रुक गयी । यह आवाज़ चंद्रकांत की ही थी, जो कह रहा था, "जानकीराम, मुझे विश्वास ही नहीं होता कि तुम्हारे पास इतनी रकम नहीं है!"

"वाकई नहीं है, चंद्रकांत । शाम को मैथिली के पिता जी ने दो सौ रुपये लिये थे । उनका कहना था कि उन पर अचानक कोई खर्च आ पड़ा है । तुम चाहो तो सूर्यदेव से मांग लो ।" जानकीराम ने चंद्रकांत को उत्तर दिया ।

"तुम सूर्यदेव की बात करते हो । अरे, वह तो अव्वल दर्जे का कंजूस है । पैसा तो उसकी जान है," चंद्रकांत एक ही सांस में कह गया ।

यह बात सुनकर मैथिली चली गयी । एकांत पाकर उसने कौतूहलवश अपने पिता से पूछा, "पिता जी, क्या आपने जानकीराम से कुछ रकम ली थी?"

विशाल को आश्चर्य हुआ । बोला, "बेटी, तुम्हें यह कैसे पता चला?"

तब मैथिली ने अपने पिता से वह सब कुछ कह दिया जो उसने सुना था ।

विशाल ने बड़े ज़ोर से अपना सर हिलाया और कहने लगा, "सच्ची बात बताऊं, बेटी? दरअसल, मैंने जानकीराम से फूटी कौड़ी भी नहीं ली है, लेकिन उसने मुझ से कहा था कि अगर सूर्यदेव या चंद्रकांत मुझसे पूछे कि मैंने जानकीराम से कुछ पैसे लिये हैं तो मैं उन्हें यही बताऊं कि हां, मैंने दो सौ रुपये लिये हैं । मैंने 'हां' में सर इसलिए हिला दिया, क्योंकि मुझे लगा कि शायद इसमें कोई राज़ हो । बाद में जब चंद्रकांत ने मुझसे इसके बारे में पूछा तो मैंने वैसा ही कहा जैसा कि मुझे बताया गया था ।" और यह कहकर विशाल ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा ।

असलियत जानकर मैथिली बहुत खुश हुई । फिर उसने अपने पिता से कहा कि वह जानकीराम से वाकई दो सौ रुपये मांग ले ।

बेटी की बात सुनकर विशाल चौंका, "क्या कहती हो । मैं उससे मांगू? न! न! यह मुझसे नहीं होगा ।"

"नहीं पिताजी, आप मेरी बात मानिए और उससे दो सौ रुपये मांग लीजिए। जब वह दे तो उन्हें ले लीजिए।" और यह कहकर वह वहां से हट गयी।

अगले दिन जानकीराम, सूर्यदेव और चंद्रकांत अपने-अपने घर लौट गये।

उनके चले जाने के बाद विशाल ने वे दो सौ रुपये अपनी बेटी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "यह रखो बेटी, मैंने जैसे ही उससे पैसे मांगे, उसने बिना एक क्षण भी सोचे मुझ दे दिये, और यह भी कहा कि इन्हें लौटाने की मैं जल्दी न करूं।"

पिता की बात सुनकर बेटी के चेहरे पर प्रसन्नता झलक गयी। पिता को कौतूहल हुआ। बोला, "लगता है तुमने अपने वर का चुनाव कर लिया है। कहीं वह जानकीराम तो नहीं?"

मैथिली लजा गयी। उसने अपना सर झुका लिया, और फिर धीरे से उसने हां का संकेत दिया।

पास ही मैथिली की मां मालती भी खड़ी थी। उसने बाप-बेटी के बीच होने वाली बातचीत सुन ली थी। कहने लगी, "चलो, चंद्रकांत न सही, जानकीराम ही सही! पर मुझे यह तो बाताओ कि जानकीराम में कौन-सी ऐसी बड़ी खूबी है?"

पत्नी का व्यंग्य भांपते हुए विशाल ने एक बार उसकी ओर तीखी नज़रों से देखा और फिर मैथिली को संबोधित करते हुए बोला, "कहो न, बेटी। अपनी मां को बताओ कि किस आधार पर तुमने जानकीराम का चुनाव किया है।"

पिता की बात सुनकर मैथिली धीरे-धीरे मुस्कराने लगी और फिर अपनी मां की ओर देखते हुए बोली, "मां, चाहूं तो इस सवाल का उत्तर काफी लंबा भी दे सकती हूं। लेकिन मैं छोटे से छोटा उत्तर देना चहूंगी। पैसा कमाना भी ज़रूरी होता है। इसी से किसी व्यक्ति की बुद्धिमता का पता चलता है। चंद्रकांत एक प्रकार से अतिवादी है। वह हमेशा ज़रूरत से कुछ ज़्यादा करता है। सूर्यदव उसके विपरीत एकदम कंजूस है। वह तो अपनी जेब से पैसा निकालना चाहता ही नहीं। जानकीराम की स्थिति इन दोनों के बीच की है। वह यह बात अच्छी

तरह जानता है कि पैसे का सदुपयोग कैसे किया जाता है। बेकार में वह पैसा खर्च करने वालों में नहीं है। चंद्रकांत ने अपना बड़प्पन दिखाने के लिए मेरे लिए एक महंगी साड़ी खरीद डाली। फिर वह जानकीराम से कर्ज़ मांगने बैठ गया। इस मामले में जानकीराम काफी गहरा है। वह यह अच्छी तरह जानता था कि चंद्रकांत को कर्ज़ में दी गयी रकम कभी वापस नहीं आयेगी। इसलिए उसने बड़ी चतुराई से उससे पीछा छुड़ाया। लेकिन वही रकम जब पिताजी ने उससे मांगी तो वह पीछे नहीं हटा। यही नहीं, उसने यह भी कहा कि पैसा लौटाने की कोई जल्दी नहीं। फिर परोक्ष रूप से उसने मेरा मन जान लिया, और मेरी पसंद की पुस्तक खरीद लाया। इससे बढ़कर योग्य और कोई क्या हो सकता है? मुझे तो लगता है वह मेरे मन की हर बात रखेगा, और उसे जो उचित लगेगा, उसके लिए न नहीं कहेगा। हां, अनुचित को वह कभी प्रश्रय नहीं देगा, बल्कि हो सकता है मेरी अनुचित मांगों पर वह लगाम डाले और उन्हें काबू में रखे। अब बताओ, मां, चंद्रकांत अच्छा है या जानकीराम?"

बेटी की बात का मां के पास कोई उत्तर नहीं था। तब विशाल ने बड़े गर्व से अपनी बेटी की तरफ देखा और बोला, "अरे, क्या बोलेगी तुम्हारी मां। इतनी दूर की सोचने की इसकी आदत नहीं।"

पति के व्यवहार से पहले तो मालती एकदम बिफर उठी, लेकिन फिर अपने को संभालती हुई मंदहास के साथ बोली, "हां हां! बड़े आयेमुझे सीख देने वाले! क्या मैथिली अकेली आप की ही बेटी है? क्या वह मेरी कुछ भी नहीं? यदि मेरी बेटी इतनी गुणवान है तो क्या मुझे उसका कोई श्रेय नहीं मिलना चाहिए?" और इस तरह अपनी खुशी ज़ाहिर करते हुए वह रसोईघर में चली गयी।

मालती के इस उत्तर पर बाप-बेटी, दोनों अपने-अपने ढंग से मुस्कराने लगे।

जादुई महल

३

[वीरगिरि की राजकुमारी विद्यावती एकाएक बीमार हो गयी है । राज ज्योतिषि की सलाह पर राजकुमारी को पास के सारस सरोवर में बने टापू महल में ले जाया जाता है । राज ज्योतिषि ने जिस-जिस दिन कहा, राजा और रानी राजकुमारी से उसी दिन मिलने गये । वे उससे दो बार मिल चुके हैं । लेकिन तीसरी बार जब वे वहां पहुंचे तो उन्होंने राजकुमारी को गायब पाया । उसके गायब होने के पहले-]

राजकुमारी विद्यावती की आधी रात के समय एकाएक आंख खुल गयी । कोई उसे धीरे-धीरे हिला रहा था । "राजकुमारी । बेटी विद्यावती, उठो । हमें राजमहल को लौटना है ।" जगानेवाली कमला थी ।

"इस वक्त? क्यों?" राजकुमारी ने पूछा ।

"आपके पिता, राजाधिराज, बीमार हैं । वह आपसे मिलना चाहते हैं । नाव हमें लेने आ पहुंची है ।" कमला ने कहा ।

"लेकिन मेरा तो ख़याल है मुझे कुछ और महीनों तक इस टापू से जाने की इजाज़त नहीं है ।" राजकुमारी ने उसे याद दिलाया ।

"वैसे तो महाराजधिराज और महारानी स्वयं ही आज यहां आते । लेकिन ऐसा हो नहीं सका, क्योंकि महाराजधिराज बीमार पड़ गये हैं । हम तो केवल इसीलिए वहां

जा रहे हैं, क्योंकि उन्होंने आप से मिलने की इच्छा व्यक्त की है ।" कमला ने कहा ।

अब तक विद्यावती अपने बिस्तर से उठकर तैयार हो चुकी थी । फिर दोनों जल्दी-जल्दी नाव की ओर बढ़ीं । चांद बादलों के पीछे जा चुका था । आकाश में मद्धिम-सा प्रकाश था । राजकुमारी ने यह भी ख़याल नहीं किया कि यह वह रास्ता नहीं है जो इस महल से नावघाट की तरफ जाता है । दूसरे, कमला उससे कुछ आगे-आगे चल रही थी । नाव पर चढ़कर उसने राजकुमारी की तरफ अपना हाथ बढ़ाया ताकि राजकुमारी भी नाव में चढ़ सके । अगले ही क्षण नाव तट से दूर हट गयी थी ।

राजकुमारी को नींद आ रही थी । हवा भी ठंडी चल रही थी । वह सिकुड़कर एक कोने में बैठ गयी । कमला चुप थी ।

नाव को झील के दूसरे किनारे तक पहुंचने के लिए काफी समय लगा । लेकिन राजकुमारी ने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया ।

वहां, दूसरे किनारे पर, एक पालकी उनका इंतज़ार कर रही थी । जैसे ही राजकुमारी पालकी में बैठी, चार वाहकों ने उसे अपने कंधों पर उठा लिया और जल्दी-जल्दी चलने लगे । राजकुमारी को लगा कि कमला भी पालकी के साथ-साथ चल रही है । इसलिए वह निश्चिंत होकर नींद में डूब गयी ।

काफी देर तक उसे इस बात की कोई ख़बर न चली कि वह कब तक सोयी रही । दरअसल, उसकी नींद तभी खुली जब उसने पालकी उठाने वालों को ज़ोर-ज़ोर से "हो-हा, हो-हा" करते सुना । उसे अब लगा कि पालकी कुछ तिरछी हो रही है । लेकिन महल के रास्ते में तो ऐसी कोई चढ़ाई नहीं है, उसे एकाएक ख़याल आया । उसने धीरे-से परदा हटाया और बाहर की ओर देखा । वहां तो बिलकुल जंगल जैसा था । थोड़ी-थोड़ी चांदनी भी थी । पालकी-वाहक टेढ़े-मेढ़ रास्तों से एक पहाड़ी पर चढ़ रहे थे । उसने अब गौर से बाहर की ओर देखा । कमला तो पालकी के साथ कहीं नहीं थी ।

अब उसे विश्वास हो गया कि उसे महल की ओर नहीं ले जाया जा रहा । तब उसे कहां ले जाया जा रहा है? उसने पालकी

वाहकों को एक बार भी रोककर पूछने की कोशिश नहीं की ।

एकाएक पालकी-वाहकों की "हो-हा" रुक गयी और पालकी को धीरे से नीचे ज़मीन पर उतार दिया गया ।

"राजकुमारी, अब तुम बाहर आ सकती हो ।" उसके कानों में किसी औरत की आवाज़ पड़ी ।

विद्यावती पालकी से बाहर आ गयी और चारों ओर देखने लगी । उसे ऐसे लगा जैसे कि वह किसी महलनुमा इमारत के सामने खड़ी हो । उसने यह भी जान लिया कि जो औरत उसके साथ सारस सरोवर वाले महल से आयी थी, वह यही थी, और बूढ़ी कमला से बहुत मिलती-जुलती थी, विशेषकर अपनी आकृति और वेशभूषा में । दरअसल, उसे यह अभी पता चलता था कि यह आवाज़ कमला की नहीं है ।

"हम हैं कहां ?" राजकुमारी विद्यावती ने जानना चाहा । वह बिलकुल शांत थी । "और तुम कौन हो? यह तो हमारा महल नहीं है । जवाब दो ।"

"मुझसे नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं, प्यारी राजकुमारी । हां, रहा यह महल, तो इसे हम जादुई महल कहते हैं । तुम्हारे लिए इतना जानना ही काफी है । तुम यहां सुरक्षित हो और तुम्हारी देखभाल भी ठीक से की जायेगी, जब तक...." । औरत ने अपना वाक्य बीच में ही छोड़ दिया ।"

"जब तक कि?" राजकुमारी ने उसी के

शब्दों को दोहराया । "और तुम कौन हो, यह तो तुमने बताया ही नहीं ।"

"तुम चाहो तो मुझे कमला कह कर पुकार सकती हो," उस औरत ने उत्तर दिया । फिर थोड़ा रुक कर बोली, "तुम्हें यहां तब तक रहना पड़ेगा जब तक मेरा मालिक चाहेगा ।"

"तुम्हारा मालिक कौन है?" विद्यावती ने पूछा ।

"यह तुम्हें धीरे-धीरे पता चल जायेगा ।" औरत ने कहा । "फिलहाल तो चलो, भीतर चलें । तुम्हारी नींद में खलल जो पड़ा था । तुम्हें फौरन बिस्तर पर लेट जाना चाहिए ।" वह औरत जैसे कि वहां की हर गति-विधि पर काबू पाये हुए थी ।

वह अब पालकी वालों की ओर मुड़ी और उनसे बोली, "तुम लोग जा सकते हो ।"

वह तब तक वहां खडी इंतज़ार करती रही जब तक कि वे अंधेरे में गायब नहीं हो गये । फिर वह सीढ़ियों पर विद्यावती को लेकर आगे-आगे चढ़ने लगी । यहां सब कुछ सुंदर था, लेकिन सब से ज़्यादा जिसने विद्यावती का ध्यान आकर्षित किया था, वे थे चारों ओर जड़े आइने ही आइने ।

कमला और विद्यावती ने साथ-साथ एक विशाल बरामदा पार किया । राजकुमारी को ऊपर के एक कक्ष में ले जाया गया । बड़ा शानदार कक्ष था वह । ताज़ा फूलों से सजाया गया । हर चीज़ यहां जगमग-जगमग कर रही थी । यहां भी चारों ओर आइने ही आइने थे ।

"अब तुम सीधे बिस्तर पर लेट जाओ और सोने की कोशिश करो । तुम तब तक नहीं उठोगी जब तक कि मैं नहीं जगाती," औरत ने आदेश के स्वर में कहा ।

राजकुमारी विद्यावती ने प्रतिरोध करने या और किसी तरह से विरोध करने का खयाल छोड़ दिया, क्योंकि वह समझ गयी थी कि वह अपने मां-बाप और राजमहल से बहुत दूर है । वह यह भी नहीं जानती थी कि इस जादुई महल में उसके साथ क्या-क्या गुल खिलाये जायेंगे । इसलिए उसने किस्मत के साथ समझौता करना ही ठीक समझा और वह बिस्तर पर लेट गयी । नींद उसे फौरन तो नहीं आयी । वह अपने माता-पिता के बारे में सोचती रही ।

एकाएक उसे अपनी परिचारिका बूढ़ी कमला की याद हो आयी । वह तब कहां थी जब उसे सारस सरोवर वाले महल से ले जाया जा रहा था?

राजकुमारी ने मन ही मन मनाया कि कमला को किसी तरह की हानि न पहुंचे और वह स्वयं भी अपने माता-पिता से जल्दी से जल्दी जा मिले ।

उधर सारस सरोवर महल में राजा वीरसेन और रानी वज्रेश्वरी मुख्य सेनापति के आने का इंतज़ार कर रहे थे । मुख्य सेनापति उग्रसेन रानी का बड़ा भाई था । जिस स्वर में नाव वाले ने उसे राजा का आदेश सुनाया था, वह इस से चौकन्ना हो गया था । वह

समझ गया था कि सारस सरोवर महल में कोई न कोई ज़बरदस्त घटना घट गयी है । वह केवल यही कामना कर रहा था कि उसकी भांजी राजकुमारी, सही सलामत हो ।

जैसे ही वह सीढ़ियां चढ़कर उस महल में पहुंचा, वह समझ गया कि जो उसने सोचा था वह लगभग ठीक ही था । जैसे ही वह महल में दाखिल हुआ, उसने देखा कि राजा, रानी और उनकी दासी, सब एक दूसरे की तरफ भौचक हुए देख रहे हैं ।

उग्रसेन ने झुककर राजा का अभिवादन किया, और साथ ही प्रश्न किया, "विद्यावती को क्या हुआ, राजन् । वह कहां है?"

"वह ग़ायब है, उग्रसेन," राजा ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया ।

"वह यहां कहीं भी नहीं है । मेरी लाड़ली कहीं भी नहीं है ।" रानी ने लंबी-लंबी सिसकियां भरते हुए कहा, "लग़ता है वह थोड़ी देर ही सो पायी थी, और फिर उसे बिस्तर छोड़ना पड़ा.... ।" वह अपना वाक्य पूरा न कर सकी, क्योंकि उसका दुःख उसे खाये जा रहा था ।

उग्रसेन अब कमला की ओर मुड़ा । वह उससे ज़्यादा विवरण पाना चाह रहा था ।

"मैं उसके बगल वाले कमरे में सो रही थी । मुझे कोई पता नहीं चला कि राजकुमारी कब बिस्तर से उठी, और कब वह अपने कमरे से बाहर गयी और कब उसने महल छोड़ा । मैंने उसकी हर जगह तलाश की । मैं समझ नहीं पा रही वह कहां ग़ायब हो सकती है । मैं तो यह सोच भी नहीं सकती कि राजकुमारी लापता है ।"

"राजन्, आप मुझे आज्ञा दीजिए । मैं एक बार फिर हर चीज़ की जांच करना चाहता हूं ।" और इन शब्दों के साथ ही उग्रसेन उस महल की तथा उससे लगे उद्यानों की पूरी तरह जांच करने लगा। उसे अपनी भांजी का कहीं सुराग नहीं मिल पाया। महल में लौटने से पहले उसने नाव वाले से भी सवाल-जवाब किये। नाव वाले का तो यही कहना था कि पिछली दोपहर वह केवल उन्हीं दो परिचारिकाओं को वापस ले गया था और उसके बाद नाव खोलने का मौका ही नहीं आया । और किसी के उस नाव में बैठने का सवाल नहीं उठता

था, क्योंकि वह नाव तो केवल राजा-रानी तथा राज परिवार के लोगों के इस्तेमाल के लिए थी ।

मुख्य सेनापति अब इस नतीजे पर पहुंचा कि और किसी नाव के न रहते हुए राजकुमारी अपने आप तो तट तक गयी नहीं होगी, और न ही उसने झील को तैर कर पार करने की कोशिश की होगी, क्योंकि कहीं-कहीं यह बहुत गहरी है और टापू के आस-पास ऐसी कोई जगह भी नहीं जहां दूसरे लोग आ जा सकें ।

जब उसने अपने विचार से राजा-रानी को अवगत कराया तो वे उससे सहमत हो गये। "लगता है सरोवर के किसी दूसरे हिस्से से कोई इस टापू पर आया होगा," उग्रसेन ने कहा, "और वह चुपके से महल में घुस गया होगा और फिर वह राजकुमारी को ज़ोर-ज़बर से या धोखे से ले गया होगा ।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि विद्यावती को किसी ने अग़वा किया है?" राजा वीरसेन ने प्रश्न किया ।

"किसी को क्या ज़रूरत पड़ी थी कि वह मेरी दुलारी को अग़वा करके ले जाये ।" रानी ने रोते हुए कहा ।

अब तक उग्रसेन कुछ निर्णयों पर पहुंच चुका था । "हुजूर, कमला कुछ दिनों के लिए यहीं, इसी महल में रहेगी । हो सकता है राजकुमारी वैसे ही चुपचाप लौट आये जैसे कि वह ग़ायब हुई है । मैं इस बात की पूरी देखभाल करूंगा कि समूचे टापू पर सैनिकों का पहरा है । वे दिन-रात चौकसी करेंगे और बाहर से किसी भी आने-जाने वाले पर आंख रखेंगे । आइए, अब हम महल को लौट चलें और कोई नयी घोषणा करने से पहले दूसरों से भी सलाह-मशिवरा कर लें । हमें बड़ी सावधानी से काम लेना होगा ।"

दरअसल, नाव वाले को इस बात का शक भी नहीं था कि कहीं कोई गड़बड़ी हुई है । नाव में बैठे तीनों यात्री तब तक बिलकुल चुप रहे जब तक कि वे दूसरे किनारे पर पहुंच नहीं गये । (जारी)

छोटा चोर–बड़ा चोर

एक ज़मींदार की अमराई के पेड़ आमों से लदे हुए थे। जहाँ देखो, वहां आम ही आम थे। इसलिए सब की निगाहें उसी अमराई पर लगी रहतीं। आम की चोरी भी खूब होती थी। हर रोज़ सैकड़ों की तादाद में आम चले जाते। आखिर मजबूर होकर ज़मींदार को अपने चौकीदार से कहना पड़ा कि वह अमराई पर अपना पहरा कड़ा कर दे।

एक दिन चौकीदार को आम की चोरी करते हुए एक बालक दीख पड़ा। वह केवल दस वर्ष का था। चौकीदार ने उसे पकड़ लिया और बड़ी सख्त आवाज़ में बोला, "कौन है तू? क्या तू वीरसिंह का लड़का है? क्यों, बोलता क्यों नहीं?"

बालक बुरी तरह से डर गया था। उसने मारे डर के तुरंत 'हां' में अपना सर हिला दिया।

चौकीदार अब अपने दांत पीसने लगा और फिर उसी तरह सख्त आवाज़ में बोला, "बदमाश कहीं का! बोल, तेरा क्या इलाज करूं? तुझे डंडे से पीटूं या तेरे बाप से कहूं कि वह तेरी खबर ले?"

बालक पहले की तरह सहमा हुआ था। धीमे से बोला, "नहीं, नहीं! तुम ऐसा काम नहीं करना। ठीक है मेरे बाप को ही बोले दो।"

"अच्छा, तू चल अपने बापू के पास।" और यह कहते हुए चौकीदार ने बालक को उसके बाजू से पकड़कर घसीटा।

"रुक, रुक। मैं खुद ही बापू को यहीं पर बुलाये देता हूं।" और वह बालक ज़ोर-ज़ोर से "बापू, बापू" कह कर चिल्लाने लगा।

बालक का चिल्लाना था कि उसी पल एक पेड़ से एक प्रौढ़ व्यक्ति उतरा। वह वीरसिंह ही था। वह बुरी तरह घबराया हुआ था, क्योंकि वह अपनी पीठ पर आम से भरा एक बड़ा-सा बोरा लिये हुआ था।

–भवानी शंकर द्विवेदी

स्त्री-रूपी पुरुष

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम उस पेड़ के पास गया, उसकी एक शाखा से लटकती लाश को उतारकर उसने अपने कंधे पर डाला और फिर हमेशा की तरह मौन साधे श्मशान के ओर बढ़ने लगा। तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "हे राजन्, इस वक्त आपको अपने महल में नरम गद्दों वाली अपनी शय्या पर निश्चिंत लेटकर सोना चाहिए था। लेकिन आप इस भयावह और सुनसान श्मशान में इस आधी रात के समय जो कष्ट उठा रहे हैं, उसे देखकर मुझे आप पर दया आ रही है। बड़े-बड़े विवेकवान व्यक्ति भी कभी-कभी अपने निजी मामलों में पूरी बुद्धिहीनता का परिचय देते हैं। इसके पीछे कारण ढूंढ़ना शायद हमारे लिए संभव नहीं। प्रमाण के तौर पर मैं आपको मालव देश के युवराज के बारे में बताना चाहता हूं। उसने एक युवती से अपने समूचे प्राणों से प्यार किया, लेकिन

बैताल कथाएं

उसके प्रति जो व्यवहार किया, वह असंगत ही नहीं, अविवेकपूर्ण भी लगता है । मैं चाहूंगा कि आप इसे ध्यान से सुनें ताकि आपका ध्यान बंटा रहे, आपका रास्ता भी आसानी से कट जाये और आपको थकान भी महसूस न हो ।"

फिर बैताल मालव देश के उस युवराज की कहानी सुनाने लगा–

मालव देश का राजा वीरसिंह काफी वृद्ध हो चुका था । उसके एक ही पुत्र था जिसका नाम सूर्यवर्मा था । सूर्यवर्मा सयाना हो चुका था । इसलिए राजा वीरसिंह चाहता था कि उसका जल्दी से जल्दी विवाह हो जाये और फिर वह उसका राजतिलक कर दे । दूसरे, सूर्यवर्मा के लिए वधू को ढूंढने की भी ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि कुंतल देश की युवरानी चंद्रप्रभा और सूर्यवर्मा एक दूसरे को जी-जान से प्यार करते थे । उधर चंद्रप्रभा का पिता भी इस विवाह के लिए राज़ी था । लेकिन दरबारी पुरोहित इस विवाह को एक साल से यह कहकर टालता आ रहा था कि मुहूर्त अच्छा नहीं है ।

इस बीच एक दिन सूर्यवर्मा अपने विदूषक मित्र के साथ रथ में बैठकर सैर के लिए निकला । उस समय रथ जंगल में से गुज़र रहा था ।

कई तरह के जंगली जानवरों और पक्षियों की आवाज़ें आ रही थीं । सूर्यवर्मा को वह समूचा वातावरण बहुत आकर्षक लगा । बीच-बीच में विदूषक आपने चुटकलों से सूर्यवर्मा का मनोरंजन कर रहा था ।

सूर्य अस्त होने तक सूर्यवर्मा जंगल में घूमता रहा । सूर्य अस्त होते ही जब चारों ओर से अंधेरा घिर आया, तो सारथी ने युवराज के चेताया कि उन्हें राजधानी को लौट जाना चाहिए । उसे डर था कि अंधेरा बढ़ जाने से वे जंगल में रास्ता भूल कर भटक सकते हैं ।

वह रथ में जुते घोड़ों को ज़ोर-ज़ोर से हांकने लगा । रास्ता चाहे ऊबड़-खाबड़ था, पर रथ हवा से बातें करते हुए उड़ा जा रहा था ।

इतने में रास्ते के बीच हाथियों के चिंघाड़ने की आवाज़ सुन पड़ी । इस आवाज़ से घोड़े घबरा गये और वे वह रास्ता छोड़कर पेड़ों,

झाड़ियों के बीच अंधाधुंध दौड़ने लगे । वे घोड़े इतने डर गये थे कि वे सारथी के काबू से बाहर हो गये थी ।

सूर्यवर्मा और विदूषक इस आकस्मिक घटना से अवाक् रह गये । अब वे स्थिति की गंभीरता समझ गये थे । लेकिन वे यह फैसला नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें रथ से कूद जाना चाहिए या नहीं । इतने में रथ का एक पहिया एक पेड़ के तने से जा टकराया जिससे रथ पलट गया और ढलान की ओर लुढ़क गया ।

विदूषक और सारथी झटके से पास की एक झाड़ी में गिर गये । सूर्यवर्मा लुढ़ककर पास के एक सरोवर में जा गिरा ।

थोड़ी देर बाद भीगे हुए कपड़ों में कोई व्यक्ति सरोवर से बाहर आया । वह मारे ठंड के कांप रहा था । उधर सारथी और विदूषक को भी कुछ चोटें आयीं थीं, लेकिन फिर भी वे किसी तरह वहां से उठ खड़े हुए थे ।

उनकी नज़र जब कांपते हुए व्यक्ति पर पड़ी तो वे एकदम सकते में आ गये । वह व्यक्ति और कोई नहीं, सूर्यवर्मा ही था ।

उन्हें इस तरह अपनी ओर भौंचक से हुए ताकते देखकर सूर्यवर्मा ने उनसे प्रश्न किया, "क्या बात है? मेरी ओर तुम लोग ऐसे क्यों देख रहे हो?"

लेकिन उनसे उत्तर पाने से पूर्व ही सूर्यवर्मा स्वयं ही चौंक उठा, क्योंकि उसके पास वह पहले वाली खनकदार आवाज़ नहीं थी, बल्कि अब वह किसी कोमलांगी की तरह सुमधुर स्वर में बोल रहा था । फिर उसने आश्चर्य

में आकर अपने शरीर की ओर एक बार गौर से देखा ।

यह क्या? वह मर्दों वाली पोशाक कहां गयी? वह तो साड़ी-चोली में था । उसके हाथों में चूड़ियां थीं और पैरों में पायल थी । अब उसका वह कसरत से कमाया हुआ लोहे का शरीर नहीं था, बल्कि किसी कोमलांगी का सुचिक्कन शरीर था ।
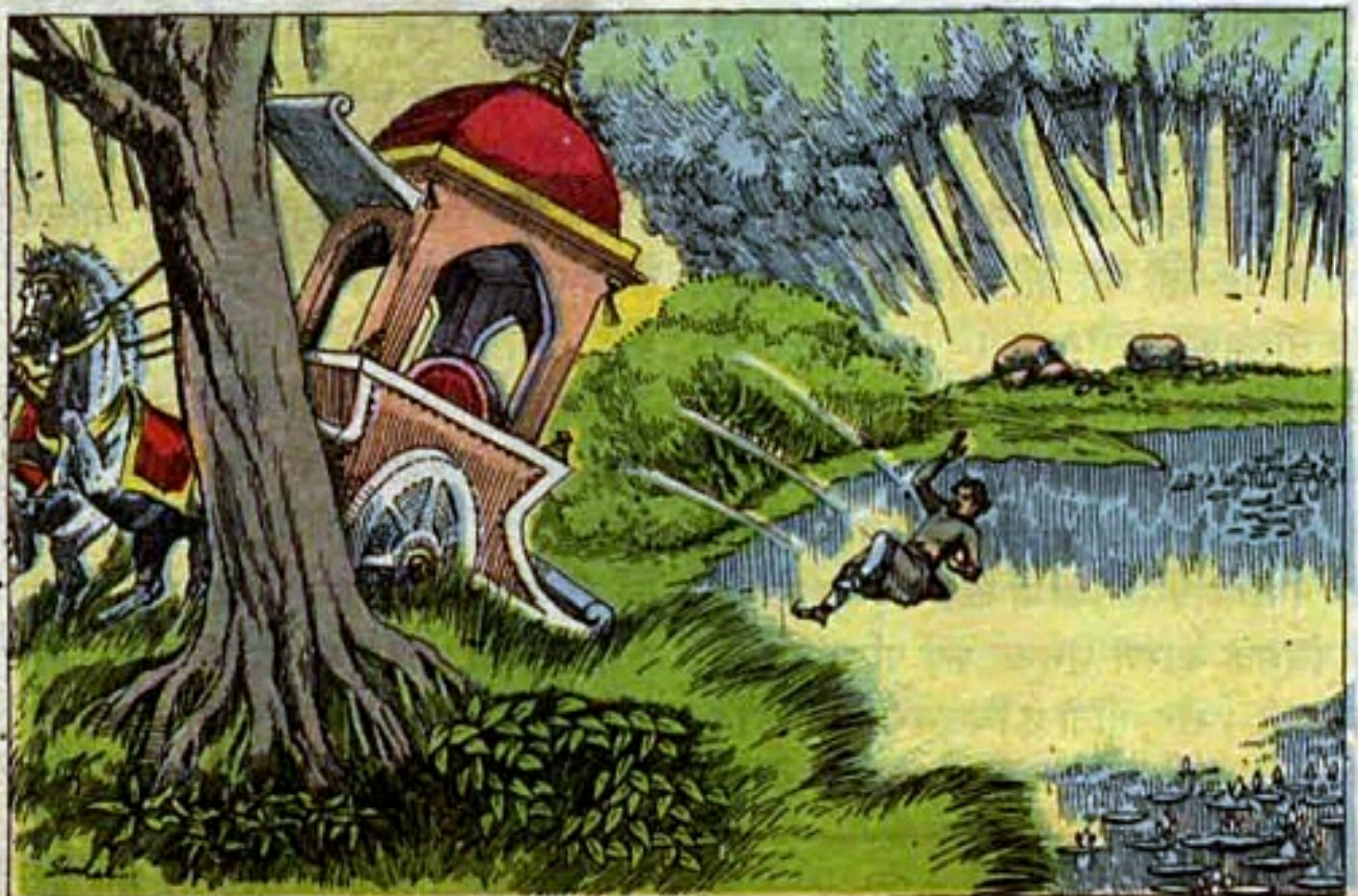
बहरहाल, अब सूर्यवर्मा को पता चल गया था कि क्यों सारथी और विदूषक उसकी तरफ भौंचक से हुए देख रहे थे । उसे यह समझते देर न लगी कि सरोवर में कोई अद्भुत शक्ति है जिसके कारण उसका रूप परिवतिर्त हो चुका है । खैर, तीनों ने मिलकर किसी तरह रथ को सीधा किया और उसमें घोड़ों को जोतकर वे सुबह होते-होते राजधानी पहुंच गये ।

अपने बेटे को एक युवती में परिवतिर्त हुआ देख राजा वीरसिंह और उसकी पत्नी बड़े दुःखी हुए । जैसे-जैसे सूरज ऊपर उठता गया, वैसे-वैसे सूर्यवर्मा के युवती में परिवर्तित हो जाने वाली खबर समूचे नगर में दावानल की तहर फैल गयी । "हमारे सूर्यवर्मा अब सूर्यप्रभा बन गये हैं ।" राजधानी के लोग आपस में कानाफूसी कर रहे थे ।

उस दिन सूर्यवर्मा राजमहल में ही रहा । वह मारे लज्जा के बाहर नहीं आया । बेशक उसका शरीर एक स्त्री का शरीर हो गया था, लेकिन उसका मन वैसे का वैसा ही था । वह पहले की तरह ही सोचता था । यानी, रूप-गुण स्त्री के और मन पुरुष का । दरअसल, उसके भीतर बड़ी ज़बरदस्त खलबली मच गयी थी । कई तरह के विरोधाभास अब सूर्यवर्मा को बहुत परेशान किये हुए थे ।

एक दिन राजा वीरसिंह ने राज ज्योतिषी से अनुनय किया कि वह इस समस्या का कोई समाधान जुटाये । राज ज्योतिषी ने उत्तर दिया, "राजधानी की ईशान दिशा में पड़ने वाले महारण्य में एक अद्भुत माया सरोवर है । उसके बारे में बहुत कम लोगों को ही जानकारी है । उसे एक यक्ष ने श्राप दे रखा है जिसकी वजह से जो पुरुष उसमें प्रवेश करता वह स्त्री बन जाता है, और जो स्त्री उसमें प्रवेश करती है वह पुरुष

बन जाती है। युवराज अनजाने में उस सरोवर में गिर पड़े थे। इसीलिए उसकी यह हालत हुई। इसे अब दैवयोग ही समझिए। चुप रह जाने के सिवा अब हमारे पास कोई चारा नहीं।"

राज ज्योतिषी की बात सुनकर राजा बड़ी चिंता में पड़ गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि इस स्थिति में क्या करना चाहिए। आखिर, एक संदेशवाहक के हाथ उसने कुंतल देश के राजा को सपष्ट शब्दों में एक संदेश भेजा। संदेश में बताया गया, "मेरा पुत्र सूर्यवर्मा दैवयोग से प्रकृति के विपरीत स्त्री का रूप पा चुका है। इसलिए वह युवरानी चंद्रप्रभा से विवाह करने के योग्य नहीं रहा।"

उत्तर युवरानी चंद्रप्रभा ने स्वयं दिया। वह सूर्यवर्मा के नाम का पत्र था। संदेशवाहक ने वह पत्र लाकर सीधा सूर्यवर्मा के हाथ में थमा दिया। उसमें लिखा था: "युवराज, यदि आपकी स्वीकृति मिल जाये तो मैं उस सरोवर में उतरकर पुरुष का स्वरूप प्राप्त कर लेना चाहूंगी। तब हम दोनों के बीच पति-पत्नी बनने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए।"

सूर्यवर्मा ने वह पत्र पढ़ा और फिर उसे अपने माता-पिता की ओर बढ़ा दिया। इससे चंद्रप्रभा के मन के विचारों से वे अवगत हुए। फिर वे अपने बेटे से बोले, "इस पत्र से तो यही पता चलता है कि चंद्रप्रभा तुम्हें बहुत चाहती है। पत्र के ज़रिये उसने जिस बात की अनुमति चाही है, उसके लिए तुम्हें एतराज़ नहीं होना चाहिए।"

मां-बाप की बात सुनकर स्त्री-रूपी सूर्यवर्मा काफी देर तक अपने विचारों में डूबा रहा। फिर बोला, "चंद्रप्रभा के विचारों से मैं सहमत नहीं। इसके लिए उसे स्वीकृति देने का अर्थ होगा, कई तरह की और झंझटों में फंस जाना। मैं उसे अभी एक पत्र लिखता हूं कि वह अपने योग्य किसी और युवराज से विवाह कर ले और अपना जीवन सुख से बिताये।"

बैताल की कहानी खत्म हो चुकी थी। वह बोला, "राजन्। सूर्यवर्मा ने इस तरह का निर्णय क्यों लिया? क्या कार्य और कारण के बीच संबंध ढूंढना व्यर्थ नहीं होता? क्या

हमें यह सोचकर चुप रह जाना चाहिए कि वह विवेकहीनता और अहंभाव का शिकार था। हो सकता है उसके मन में यह विचार आया हो कि जब चंद्रप्रभा उसका पति बन जायेगी तो उसे पत्नी-रूप में दबकर रहना होगा। हो सकता है इस विचार से उसकी पुरुषोचित अस्मिता को ठेस पहुंची हो। दरअसल, अगर उसने चंद्रप्रभा से सही मानों में प्यार किया होता तो वह उसे ज़रूर लिख भेजता कि वह उसे किसी भी रूप में स्वीकार्य है। वह उसे कभी भी यह न लिख भेजता कि वह किसी अन्य पुरुष से विवाह कर ले। कुछ भी हो, सूर्यवर्मा का यह व्यवहार बड़ा विवेकहीन और असंबद्ध लगता है। आपको इस विषय में क्या कहना है? यदि इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी आप स्थिति स्पष्ट नहीं करेंगे तो आपका सर फट जायेगा।"

इस पर राजा विक्रम बोला, "सूर्यवर्मा के निर्णय का कारण ढूंढ़ पाना कोई कठिन नहीं। यहां कार्य-कारण संबंध साफ दिख पड़ रहा है। स्त्री के रूप में पुरुष का मन लेकर जीना कितना कष्टकर होता है, यह सूर्यवर्मा बड़ी अच्छी तरह जान गया था। यदि युवरानी चंद्रप्रभा भी उस सरोवर में उतर कर पुरुष का रूप धारण कर लेती और मन उसका वहीं का वहीं रहता तो उसे भी उसी प्रकार मानसिक यंत्रणा में से गुज़रना पड़ता जिस मानसिक यंत्रणा में से सूर्यवर्मा गुज़र रहा था। सूर्यवर्मा का प्यार चंद्रप्रभा के प्रति बिलकुल सच्चा था, और उस प्रकार का प्यार करने वाला प्रेमी यह कभी नहीं चाहेगा कि उसकी प्रेमिका तमाम उम्र मानसिक यंत्रणा झेलती रहे। इसी कारण उसने चंद्रप्रभा के उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इस तरह उसके निर्णय में हमें कहीं भी विवेकहीनता, असंबद्धता या पुरुष-अहं के दर्शन नहीं होते।"

बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था। इसलिए बैताल लाश को लेकर वहां से तुरंत अदृश्य हो गया और फिर उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा।

बाल कवि

वेंकटापुर में एक जमींदार रहता था। वह कवि-पंडितों के प्रति बड़ा स्नेह रखता था। इसलिए वह हर वर्ष वसंतोत्सव मनाता और कवि-पंडितों का सम्मान करता।

और तो और, वह जमींदार इन कवियों के बच्चों के प्रति भी वैसा ही स्नेह रखता था, और उन बाल कवियों से कविता-पाठ करवाता था। इससे उसका मनोरंजन भी हो जाता।

एक बार इसी प्रकार वसंतोत्सवमें भाग लेने के लिए कुछ बाल कवयिों की परीक्षा ली गई। ऐसे बाल कवि, जो कविता-पाठ में काफी चतुर हों, अनेक नहीं होते। यह बात जमींदार जानता था। इसी लिए श्रेष्ठ बाला कवियों के चयन के लिए उसने यह प्रबंध किया था।

आखिर, इस प्रकार कविता-पाठ करने वाले तीन बाल कवियों का चयन हुआ। उन्हें देखकर ज़मींदार बोला, "आह, क्या बात है। इन नन्हें कवियों का कविता-चातुर्य अद्भुत है। यह इन्हें वंशानुगत रूप में प्राप्त हुआ है। मैं बेहद खुश हूं।" ज़मींदार की बात सुनकर उसका दीवान बोला, "हुजूर, ये तो केवल रटंतू तोते हैं। कविता कभी किसी को सिखायी नहीं जा सकती। यह सहज रूप से अपने आप आती है। ये बाल कवि क्योंकि कवि परिवारों से आये हैं, इसलिए थोड़ी बहुत नकल कर लेते हैं। लेकिन अपनी कल्पना-शक्ति के बल पर कभी कवि बन पायेंगे, इस पर मुझे संदेह है।"

दीवान की इस टिप्पणी पर ज़मींदार की प्रतिक्रिया तीखी थी। वह पलटकर बोला, "ठीक है, ये भविष्य में कवि बन पायेंगे या नहीं, इसकी जाँच मैं करूंगा।"

उदय कुमार वर्मा

दो महीने इसी तरह बीत गये । ज़मींदार का जन्म दिवस मनाया जा रहा था । रात के समय अमराई में बहुत बड़ी दावत की व्यवस्था की गयी थी । कवि-पंडितों के बीच उस दावत में पहले चुने गये वे तीन बाल कवि भी मौजूद थे ।

दावत खत्म हुई । आकाश में आधा चंद्रमा चमक रहा था । ज़मींदार ने तीनों बाल कवियों को अपने पास बुलाया और उनसे बोला, "उस अर्द्ध चंद्रमा की ओर देखो और मुझे बताओ वह कैसा लग रहा है ।"

अब उन तीनों बाल कवियों की आंखें चंद्रमा पर कुछ देर तक टिकी रहीं । तभी एक बाल कवि बोला, "ऐसे लग रहा है जैसे भगवान् शिव की जटा में से निकलकर वह अर्द्ध चंद्रमा आकाश में झांक रहा हो ।"

दूसरे बाल कवि ने भी तुरंत कहा, "आज तो ऐसे लग रहा है जैसे आपके जन्म दिवस के पवित्र उत्सव पर इस चंद्रमा ने इन दीपों को अपनी रोशनी दे डाली हो ।"

उन बाल कवियों के मुंह से इस प्रकार की उपमाएं सुनकर ज़मींदार को बहुत खुशी हुई । ज़मींदार के अलावा वहां उपस्थित दूसरे मेहमानों ने भी हर्ष-ध्वनि की ।

अब ज़मींदार ने तीसरे बाल कवि की ओर देखा और बोला, "तुम भी कुछ बताओ । तुम्हें इस अर्ध चंद्रमा को देखकर कैसा लग रहा है?"

तीसरे बाल कवि ने पहले ग़ौर से आकाश में चमकनेवाले चंद्रमा की ओर देखा और फिर बोला, "मैं तो एक बाल कवि हूं न! मुझे तो यह नींबू की फांक जैसी मिठाई जैसा लग रहा है । मुझे यह मिठाई बहुत अच्छी लगती है ।"

यह उत्तर वास्तविकता पर आधारित था और चमत्कारपूर्ण था । ज़मींदार इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ । वह उस बाल कवि को आशिष देते हुए बोला, "तुम वास्तव में कवि हो । बड़े होकर तुम खूब नाम कमाओगे । तुम्हारी इस सहज उपमा से मैं बहुत प्रभावित हुआ ।" और यह कहकर उसने उस बाल कवि को गले से लगा लिया ।
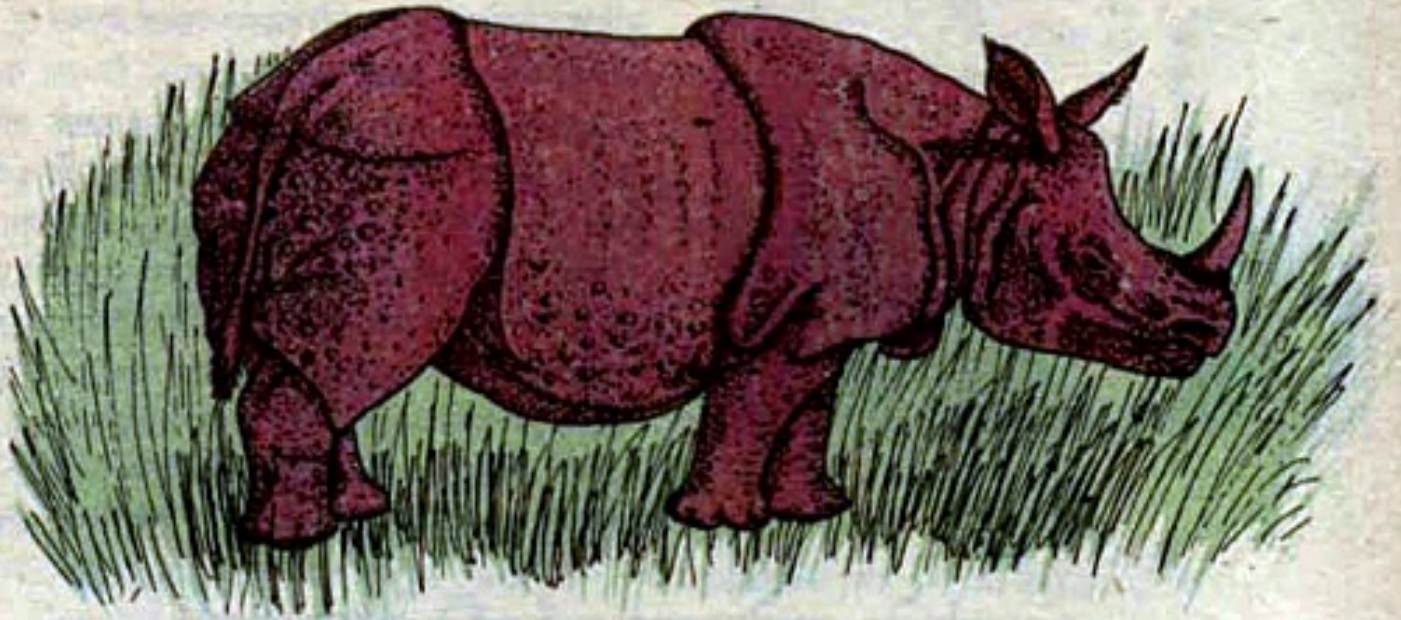
भारत के पशु-पक्षी

संकट से घिरा गैंडा

गैंडा भारत, इंडोनेशिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में ही पाया जाता है । इसकी पांच किस्में हैं । उनमें सबसे प्रसिद्ध किस्म है बृहत् भारतीय गैंडा । बाकी किस्में हैं अफ्रीका के काले, सफेद गैंडे, जावा का गैंडा तथा सुमात्रा का गैंडा । इस बीभत्स से दिखनेवाले पशु की खास पहचान है इसकी थूथनी पर उगा सींग। भारतीय किस्म में केवल एक ही सींग होता है, लेकिन अफ्रीका की किस्मों में आम तौर पर दो सींग पाये जाते हैं । यह सींग हड्डी का नहीं होता, बल्कि बालों का गुच्छा होता है जो बहुत कड़ा पड़ा होता है । इसके कान तुरही के आकार के होते हैं और उनके सिरों पर बाल ही बाल होते हैं । पूंछ के निचले हिस्से पर भी बाल होते हैं । लेकिन इस पशु की खाल बहुत ही चिकनी और मोटी होती है । शरीर बहुत ही विशाल और मजबूत । कंधों तक की ऊंचाई आम तौर पर १८० सें.मी. होती है ।

कुछ लोगों का कहना है कि गैंडे के सींग में औषधीय गुण होते हैं । इसलिए उसके सींग को प्राप्त करने के लिए उसको बड़ी बेरहमी से मार दिया जाता है । इसी कारण गैंडे की संख्या तेज़ी से कम होती जा रही है ।

मजबूर होकर सरकार को गैंडे को एक संकटास्पद पशु घोषित करना पड़ा, और उनके लिए अभयारण्य स्थापित किये गये । काज़ीरंगा, जलदापाड़ा, गोरूमारा तथा सुनाई-रूपाई के अभयारण्य बहुत मशहूर हैं और ये सब के सब असम में हैं । प्रमाणों के अनुसार यह पशु प्रागैतिहासिक काल में बहुत भारी संख्या में पाया जाता था ।

सबसे छोटा संगीतकार

पश्चिमी गोदावरी ज़िले के एक छोटे से नगर में एक पांच-वर्षीय बालिका ने एक छोटे से झोले में अपने कुछ कपड़े ठूसे और माता-पिता को बताये बिना ही घर से निकल पड़ी । मद्रास में वह अपने चहेते पार्श्व-गायक से मिलना चाहती थी ।

यह बात सात साल पुरानी है । तब से बहुत कुछ हो चुका है । आज श्रीलेखा सबसे कम उम्र की फिल्मी संगीतकार मानी जाती है। इतनी कम उम्र का संगीतकार पहले कभी नहीं हुआ । संभव है इसका नाम गिन्नेस बुक ऑव रिकार्ड्स में आ जाये । उसने हाल ही में अपने पहले गाने की रिकार्डिंग पूरी की है । यह गाना एक तेलुगू फिल्म के लिए गाया गया है ।

इन पिछले सात वर्षों में क्या-क्या घटा, यह भी अपने आप में एक दिलचस्प कहानी है । श्रीलेखा को आखिर पुलिस और उसके माता-पिता ने ढूंढ़ ही निकाला और फिर उसकी बात बड़े ध्यान से सुनी । वह जब मद्रास चली आयी तो उसके रिश्ते के एक भाई मरकतमणि ने उसकी मदद की । वह स्वयं एक संगीतकार है । उसने इस बालिका के सामने प्रस्ताव रखा कि वह उसकी देख-रेख में काम करे । उसने उसे शास्त्रीय संगीत सिखाया और फिल्मी संगीत की बारीकियां सिखाईं ।

श्रीलेखा ने इस बीच एक पक्का फैसला कर लिया था कि वह केवल संगीत ही सीखना चाहती थी, और कुछ नहीं । राग-रागनियों के लिए उसकी स्मरण-शक्ति अद्भुत थी । मरकतमणि को उसकी प्रतिभा का जल्दी ही पता चल गया । अब वह जहाँ कहीं भी जाता, वह उसके साथ होती । फिल्मों के लिए गानों की रिकार्डिंग जारी थी । दो साल तक यह नन्हीं बालिका एकचित्त होकर अपनी लगन में डूबी रही । उसका समय केवल फिल्में देखने में ही बीतता था, या वह उन्हीं फिल्मों के संगीत के डिस्क या टेप सुनती रहती थी । एक दिन जब रिकार्डिंग चल रही थी तो मणि ने उसे आर्केस्ट्रा (वाद्य वृंद) में हाथ बंटाने को कहा । तब तक श्रीलेखा ने हारमोनियम बजाना सीख लिया था । इसलिए उसने रिकार्डिंग रूम में रखे एक वाद्य यंत्र को उठाया और उसे बड़े आराम से बजाने लगी । वहां पर जो दिग्गज मौजूद थे, वे यह देखकर हैरान रह गये । उसे एक गीत के बोल दिये गये और श्रीलेखा को उसकी धुन तैयार करने में तीन मिनट से ज़्यादा समय नहीं लगा । धुन भी बड़ी प्यारी थी । अब हर किसी की ज़बान पर यही था कि श्रीलेखा संगीतकार बन गयी है ।

जिन समीक्षकों ने उसकी धुनें सुनी हैं, वे उसके सृजन की मौलिकता की दाद दिये बिना नहीं रहते । उसकी धुनों के बारे में यह कहा गया है कि उनमें पारंपरिक लोकधुनों के अंशों के साथ-साथ पश्चिमी धुनों का समावेश है ।

यह बारह-वर्षीय बालिका श्रीलेखा चॉकलेट और आइसक्रीम बहुत पसंद करती है लेकिन जब कभी उसे समय मिलता है तो वह कैरम खेलना भी पसंद करती है ।

जब कभी तुम किसी फिल्म के संगीत निर्देशक के नाते मणिमेकला का नाम देखो तो समझ लो तुम्हें कोई गलती नहीं लगी । श्रीलेखा ने अब अपने फिल्मी जीवन के लिए यह फिल्मी नाम चुना है ।

क्या तुम जानते हो?

१. १४ अप्रैल को केरल में "विशु" मनाया जाता है। इसीसे फसल की कटाई के वर्ष की शुरुआत मानी जाती है। इसे वे लोग "मेडा संक्रमण" कहते हैं। उसी दिन उत्तर पूर्व के एक राज्य में भी एक उत्सव मनाया जाता है। उससे भी नये वर्ष की शुरुआत होती है। यह कौन सा राज्य है? उस उत्सव का नाम क्या है?
२. एक ईसाई संत का जन्म दिवस मई दिवस पर मनाया जाता है। वह संत कौन है?
३. बूकेफाला नगर हमें दो विश्वविख्यात नामों की याद दिलाता है। वे नाम क्या हैं?
४. भारत के एक खेल में तेल में सना नारियल गेंद के तौर पर इस्तेमाल होता है। इस खेल का नाम क्या है, और यह कहां खेला जाता है?
५. चंद्रगुप्त मौर्य ने कितने वर्ष तक शासन किया? उसके पुत्र ने एक वर्ष अधिक शासन किया। उसका नाम क्या था?
६. रूसी भाषा के लिए कौन सी लिपि इस्तेमाल की जाती है?
७. पहली बार एक राजकुमारी केंद्रीय मंत्रि मंडल की सदस्य बनी। वह कौन थी?
८. चंडीगढ़ का विख्यात रॉक गार्डन किसने तैयार किया?
९. औरंगजेब ने अपनी एक बेटी को उसके गैर-रूढ़िवादी विचारों के लिए उसे २० वर्षों तक कैद में रखा। वह कौन थी?
१०. किस सिख गुरु ने गुरु ग्रंथ साहिब में जयदेव कृत "गीत गोविंद" के गीत शामिल किये?
११. तुलसी के पौधे को घर के सामने वाले आंगन में क्यों रखा जाता है?
१२. वह प्रसिद्ध गैर-राजनैतिक व्यक्ति कौन था जो कलकत्ता से संसद के लिए निर्वाचित हुआ?
१३. किसने कार्ल लेविस के १०० मीटर के लंबे रिकार्ड को तोड़ा?
१४. कहते हैं सारस की कोई आवाज नहीं होती। तब वह अपने साथी को कैसे आकर्षित करता है?
१५. १८०४ में जब नेपोलियन फ्रांस का सम्राट् बना, तब उसी वर्ष परिवहन की दुनिया में एक जबरदस्त घटना घटी। वह घटना क्या थी?

उत्तर

१. असम-विहू।
२. ईसा मसीह के धर्म पिता संत जोसफ, जो पेशे से बढ़ई थे।
३. सिकंदर महान ने इस नगर की नींव रखी। तब उसके घोड़े बूकेफेलस की यही मृत्यु हुई थी।
४. युबी लक्सी-मणिपुर
५. २४ वर्ष। अशोक का पिता बिंदुसार।
६. सिरिलिक।
७. राजकुमारी अमृतकौर नेहरू मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री थीं।
८. नेकचंद।
९. जेबुन्निसा।
१०. गुरु अर्जुनदेव
११. लोगों का विश्वास है कि यह सुरक्षा और समृद्धि का द्योतक है।
१२. मेघनाद साहा।
१३. लिरोय ब्यूरल।
१४. पूरी ताकत से नाचकर।
१५. आर. ट्रेविथिक ने पहली बार सफलतापूर्वक भाप का इंजन चलाया था।

चंदामामा की खबरें

हम हर रोज़ करोड़ और अरब जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ज़रा सोचो कि दस खरब कितना होता होगा? बड़ा मुश्किल दिखता है न! अब ज़रा सोचो कि १/१० खरब कितना होगा? हिसाब लगाते-लगाते सांस फूल जायेगी। लेकिन इसके लिए एक छोटा सा शब्द इस्तेमाल होता है। वह है "माइक्रो"। इधर इस शब्द का इस्तेमाल "माइक्रो कंप्यूटर" में हुआ है।" इससे अभिप्राय वह कंप्यूटर है जो माइक्रो कंप्यूटर से भी छोटा है। माइक्रो कंप्यूटर डैस्क टॉप पर्सनल कंप्यूटर का ही दूसरा नाम है। यह सिर्फ हथेली के आकार का होता है। यह जेब में आसानी से आ जाता है। इसमें नया सुपर चिप काम में लाया जाता है। वह दिन दूर नहीं जब तुम अपना पी.सी. (पर्सनल कंप्यूटर) अपनी घड़ी या पैन में लिये घूमोगे।

सबसे तेज़ रफ्तार

उत्तर पश्चिमी जापान में चलने वाली शिनकानसेन एक्सप्रेस ने ३४५ कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ कर हाल ही में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यह नया कीर्तिमान जोमोकोगन और उरावा स्टेशनों की बीच वाली सुरंग में स्थापित किया गया।
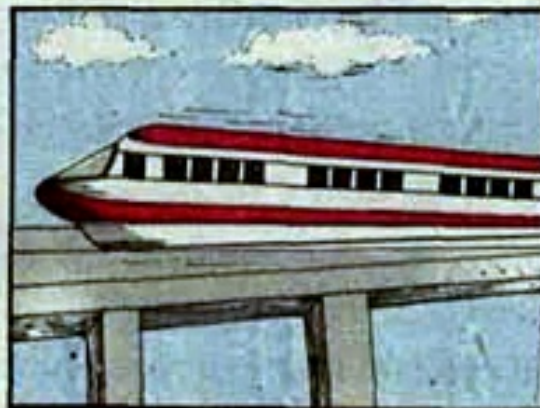
इसी मार्च के महीने में इस गाड़ी ने ३३६ कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ी थी। उस समय यह गाड़ी परीक्षण पर थी। लेकिन अब तक का विश्व रिकार्ड फ्रांस की टी.जी.वी. सुपर एक्सप्रेस ने ५१५.३ कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़कर कायम किया।

सबसे पुराना

लगभग १५० वर्ष पहले स्काटलैंड में १८५० के आस-पास कुछ जीवाश्म ढूंढ़ निकाले गये। उनको ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अपने अनुसंधान के लिए जांच कर रहे थे। हाल ही में उन्होंने यह बताया कि ये जीवाश्म एक ऐसे रीढ़ वाले जीव के हैं जो आज से ३७ करोड़ वर्ष इस पृथ्वी पर चला होगा। उनका विश्वास है कि यह सेलामेंडर (छिपकली) या घड़ियाल की तरह का कोई विशालकाय जीव रहा होगा। लेकिन इसकी पूंछ और गलफड़े पर मछली जैसे पंख (फिन) रहे होंगे। ये जीवाश्म ३६ करोड़ वर्ष पहले ग्रीनलैंड में मिले जीवाश्मों को भी पीछे छोड़ गये हैं।

नौकरी की कीमत

देवासर गांव में सदानंद नाम का एक धनवान व्यक्ति रहता था । वह अपनी ज़मीन-जायदाद की आमदनी का लेखा-जोखा रखने के लिए एक व्यक्ति की नियुक्ति करना चाहता था । पड़ोस के गांव में उसका एक मित्र विद्यानंद रहता था । विद्यानंद को जब यह खबर मिली तो उसने एक चिट्ठी के साथ अपने भांजे, नारायण को उसके यहां भेजा ।

जब नारायण सदानंद के यहां पहुंचा तो उसने अपने आने की खबर सदानंद के नौकर के हाथ भीतर भिजवायी । सदानंद को जैसे ही यह खबर मिली, उसने अपने नौकर से कहलवा भेजा, "उस लड़के से कह दो कि मैं घर पर नहीं हूं, और मेरे लौटने मे कम से कम दो-तीन घंटे लगेंगे ।"

नौकर ने वैसा ही किया जैसा उसे आदेश मिला था । उधर नारायण बार-बार एक ही बात की रट लगाये हुए था, "क्या मालिक आये नहीं?" और नौकर बराबर एक ही उत्तर दे रहा था "नहीं ।"

इस तरह एक घंटा बीत गया । नारायण को लगा कि वह आज सदानंद से मिल नहीं पायेगा । उसके लिए वहां बैठे रहना कांटों की सेज पर बैठने के समान हो गया । आखिर जब वह बहत परेशान हो गया तो उसने नौकर को बुलाकर कहा, "देखो भाई । मालिक आयें तो उन्हें बता देना कि मैंने यहां बहुत प्रतीक्षा की और मैं अभी-अभी यहां से गया हूं । मेरे आने का कारण तो तुम जानते ही हो?"

सदानंद के यहां से लौटकर नारायण नदी किनारे आया । अब उसे पक्का विश्वास हो गया था कि वह आज सदानंद से मिल नहीं पायेगा, और उसे किसी और दिन यहां आना होगा । वह अपने गांव को लौटने को

मनोज वर्मा

ही था कि उसे नदी किनारे कुछ लोग बातें करते दिखाई दिये ।

वहां जमे लोगों में से एक से नारायण ने पूछा, "नाव कब छूटेगी?"

इस पर उसे उत्तर मिला, "नाव कब छूटेगी, यह बता पाना संभव नहीं । नाविक का कहीं अता-पता नहीं ।"

और देखते-देखते ऐसे ही एक घंटा और बीत गया । नाविक नहीं आया था । नारायण के मुंह से निकला, "पता नहीं यह नाविक कब आयेगा, और आयेगा भी कि नहीं!"

यहां जुटे व्यक्तियों में से एक बोला, "आपकी तरह हमें भी पार जाना है । पर खामख्वाह की जल्दी करने से क्या फायदा?"

लेकिन थोड़ी देर में ही नारायण की सहन-शक्ति समाप्त हो गयी । वह अब और इंतज़ार नहीं कर सकता था । वहां बैठे लोगों से बोला, "कमाल के हैं आप लोग । इतनी देर होती जा रही है, इसके बावजूद आपमें से किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही । ठीक है । मैं ही उसे ढूंढ़कर लाता हूं ।" और यह कहकर नारायण घाट से गांव की तरफ चल दिया ।

गांव में नारायण ने नाविक के घर का पता लगाया और फिर उसके यहां जा पहुंचा । उसे देखकर नाविक की पत्नी बोली, "उसे बड़े ज़ोरों का पेट दर्द हो आया था । इसलिए वह दवाई लेने चला गया । वहां उसे दवाई मिलने में काफी देर हो गयी । अभी-अभी वह वहां से लौटा है । अब वह घाट की ओर दौड़ा-दौड़ा गया है ।"

नारायण भी तब घाट की ओर दौड़ा । वहां पहुंचा तो देखा, नाव निकल चुकी है । वह किनारे से काफी दूर जा चुकी थी । नारायण बहुत परेशान हो उठा और नाव की ही दिशा में देखता रहा । तभी वहां एक व्यक्ति आया और उससे बोला, "लगता है तुम नाव नहीं पकड़ पाये । खैर, इंतज़ार करो । एक घंटे तक यह नाव लौट आयेगी । मैं यहीं रहूंगा । मुझे भी पार जाना है । मैं नाव वाले से कहूंगा कि वह हमें पार पहुंचा दे ।"

बातों-बातों के दौरान नारायण को पता चला कि यही वह व्यक्ति है जिससे उसे मिलना था । यानी वह सदानंद ही था । जैसे ही उसे यह भान हुआ, उसका चेहरा प्रसन्नता

से खिल उठा । उसने तुरंत अपने मामा विद्यानंद की चिट्ठी उसकी ओर बढ़ा दी, लेकिन सदानंद ने उसे लेने से इनकार कर दिया । कहने लगा, "तुम्हारे मामा ने मुझे पहले ही बता दिया था कि वह तुम्हें मेरे पास भेजेगा । तुम्हें चाहिए था कि तुम मुझे मेरे घर पर मिलते । इस तरह रास्ते में नहीं । अब किसी और दिन आ जाना, और मुझे घर पर ही मिलना ।

सदानंद की बात सुनकर नारायण उदास हो गय । कुछ बोल नहीं सका । कुछ देर बाद नाव लौट आयी । नारायण और सदानंद उसमें बैठकर नदी के दूसरे किनारे जा पहुंचे ।

सदानंद नारायण के साथ-साथ विद्यानंद के घर ही चला आया, और फिर उसने नारायण के उसके यहां पहुंचने से लेकर अब तक जो कुछ घटा था, वह सब विद्यानंद को संक्षेप में बता दिया । अंत में बोला, "मैं जानता हूं कि तुम जिस व्यक्ति को मेरे पास नौकरी के लिए भेजोगे, वह पूरे भरोसे का होगा । मेरे दादाजी कहा करते थे कि जो व्यक्ति सब्र नहीं कर सकता, उसे प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी । मुझे ढेर सारे काम निपटाने होते हैं । मैं उन कामों को जिसके हाथ में सौंपूंगा, उसकी सहनशक्ति के बारे में मुझे पूरी जानकारी होनी चाहिए। इसीलिए नारायण की मैंने यह परीक्षा ली ।"

सदानंद की बात सुनकर नारायण ने लज्जित अनुभव किया और फिर सदानंद से बोला, "मेरी कमियां आपने मुझे अच्छी तरह दिखा दीं । सब्र, सहनशीलता व्यक्ति में जन्म से ही होने चाहिए । मैं अब इतना ही कहना चाहता हूं कि यदि आप जैसे व्यक्ति की छत्र-छाया में मुझे काम करने का अवसर मिला तो मैं अपने को पूरी तरह दुरुस्त कर लूंगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं ।"

नारायण की बात सुनकर सदानंद ने प्यार से उसके कंधे पर अपना हाथ रखा और कहने लगा, "मैं जानता हूं तुम झूठ नहीं कह रहे, सच ही कह रहे हो । तुम कल से आ जाओ और काम करना शुरू कर दो । अब मुझे यहां कुछ काम निपटाने हैं, इसलिए मैं जाना चाहूंगा ।" और यह कहकर सदानंद चला गया ।
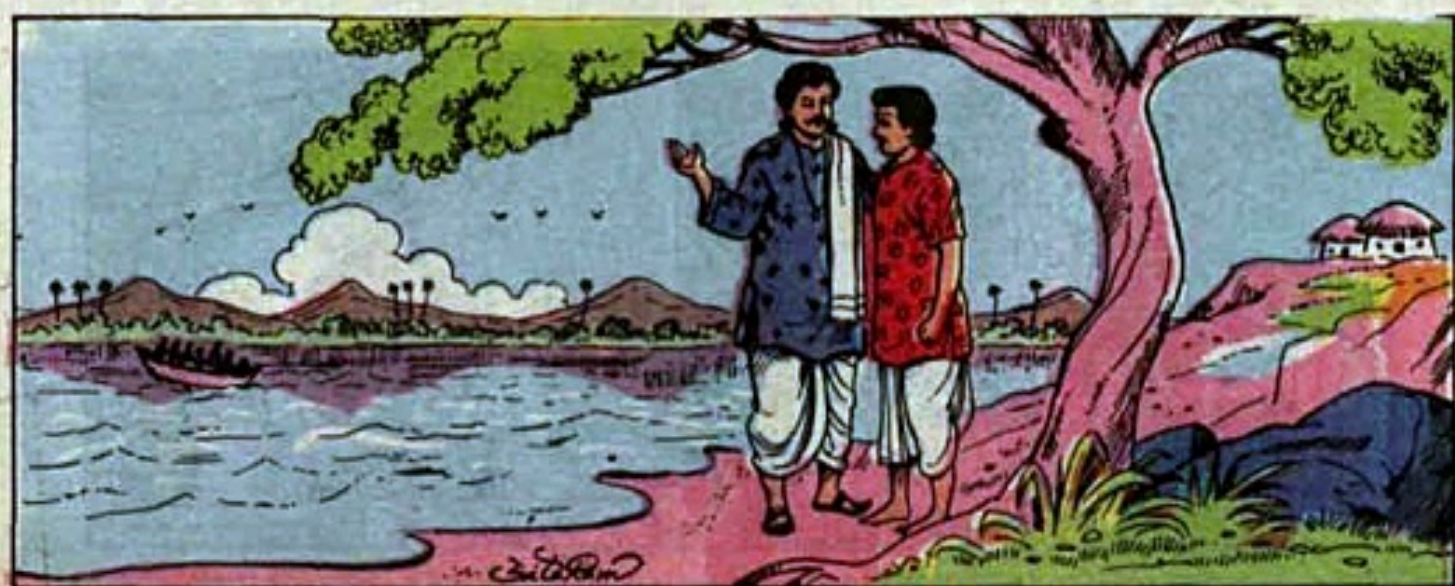
हानि

एक गांव में सुभाष नाम का एक व्यापारी रहता था। उसका व्यापार अच्छा चलता था। उधर वहां नरसिंह नाम का एक छोटा-सा किसान भी रहता था। यह किसान और यह व्यापारी आपस में दोस्त थे।

नरसिंह के एक ही बेटा था। उसका नाम नारायण था। वह पढ़ाई में काफी तेज़ था। सुभाष यह बात अच्छी तरह जानता था, इसीलिए वह नरसिंह को बराबर आर्थिक सहायता देता रहता।

कुछ समय बाद नारायण की पढ़ाई खत्म हुई। तब नरसिंह ने सुभाष से प्रार्थना की कि वह उसे अपने यहां किसी नौकरी पर रख ले।

सुभाष ने नारायण को बुलवा भेजा और उससे प्रश्न किया, "तुम्हारी अंतिम परीक्षाओं में तुम्हें गणित में कितने प्रतिशत अंक मिले?"

"९९ प्रतिशत!" नारायण ने झट से उत्तर दिया।

"यानी तुमने सौ में एक गलती की! दूसरे शब्दों में तुमने १०० के पीछे एक नुक्सान किया। इसका अर्थ तो यह हुआ कि १०० के पीछे एक, हजार के पीछे दस, और दस हजार के पीछे एक सौ।... यानी इस तरह तो यह नुक्सान बढ़ता ही जायेगा। मेरा व्यापार लाखों में है। इस तरह तो मुझे हजारों का नुक्सान उठाना पड़ेगा। इसके लिए मैं तैयार नहीं हूं। यदि तुम अपने को गणित में वाकई होशियार समझते हो तो तुम राज्य की ओर से होनेवाली खजाने से संबंधित किसी नौकरी के लिए परीक्षा दो।" सुभाष ने सुझाव दिया।

नारायण ने वैसा ही किया। राज्य की कर-वसूली शाखा में उसकी एक अधिकारी के पद पर नियुक्ति हो गयी। यह खबर पाते ही नरसिंह सुभाष के यहां दौड़ा-दौड़ा गया और उससे बोला, "नारायण को खजाने की नौकरी मिल गयी है। लेकिन यह बताओ कि इससे खजाने को किसी तरह का नुक्सान तो नहीं पहुंचेगा? तुमने बड़ी चतुराई से अपने को होनेवाल नुक्सान से बचा लिया, लेकिन राजा ऐसा नहीं कर सका।" वह सुभाष को ताना दे रहा था।

सुभाष ने बड़े स्नेह से नरसिंह के कंधे पर हाथ रखा और उससे बोला, "अरे पगले, मेरे यहां की नौकरी बड़ी है या राजा के यहां खजाने की नौकरी? जब मैंने यह महसूस किया कि नारायण गणित में बहुत तेज़ है तो मैंने मन ही मन चाहा कि वह भविष्य में किसी प्रकार की तंगी न देखे। इसीलिए मैंने काल्पनिक हानि की बात उठायी। नारायण को यह नौकरी मिल गयी है, इसलिए मैं बहुत खुश हूं। तुम मेरी बधाई स्वीकार करो।"

—लक्ष्मी विद्या

नाकाम दिव्यशक्तियां

शीतल के मां-बाप नहीं थे । उसके पास ज़मीन-जायदाद भी नहीं थी । वह हर प्रकार का काम कर सकता था । लेकिन लोग उससे मुफ्त में ही काम लेते थे ।

देखने में भी शीतल काफी सुंदर था । इसलिए गांव की कई लड़कियां उसके प्रति आकृष्ट थीं । लेकिन प्रभात की बेटी श्यामा उससे सचमुच प्यार करने लगी थी ।

शीतल ने उस के बारे में अपने परिचितों से बातचीत की । सब का एक ही उत्तार था "श्यामा नटखट और मुंहज़ोर है । अपनी ज़िदंगी नरक बनाना चाहते हो तो बेशक उससे शादी कर लो ।"

एक दिन श्यामा के पिता प्रभात ने शीतल से कहा, "मेरी बेटी तुम्हारे सिवाय और किसी से शादी करना नहीं चाहती । तुम रहे एक निठल्ले युवक । मेरी बेटी बड़ी महत्वाकांक्षी है । जब तक तुम यहां रहोगे, वह किसी और की तरफ देखेगी भी नहीं । इसलिए मुझ पर कृपा करो और कुछ दिनों के लिए यह गांव छोड़कर कहीं और चले जाओ ।"

शीतल ने प्रभात की बात मान ली । वह उस गांव को छोड़कर जंगल की ओर बढ़ गया । रास्ते में उसकी मुलाकात एक साधु से हुई । वह फिर उसे साष्टांग प्रणाम करके अपनी राम कहानी सुनाने लगा । तब साधु ने उसे अपने साथ चलने को कहा ।

शीतल चुपचाप उस साधु के पीछे-पीछे चल पड़ा । दो सप्ताह तक वह उसके साथ रहा और उसकी खूब सेवा करता रहा । वह उसके लिए हर प्रकार का काम करता । पानी भरकर लाता, खाना बनाता, उसे खिलाता और रात को सोते समय उसके पांव दबाता ।

इसी तरह दो सप्ताह बीत गये । तब

साधु बोला, "अब मुझे काशी जाना है। तुम कोई और साधु ढूंढ लो।"

शीतल ने चुपचाप सर हिला दिया और फिर वहां से जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। साधु को उसके भोलेपन पर बहुत दया आयी। उसने उसे रुकने को कहा। शीतल रुक गया। साधु बोला, "तुम सचमुच बड़े भोले हो। इसी प्रकार बने रहोगे तो लोग तुम्हें धोखा देते रहेंगे। मैं तुम्हें कुछ दिव्य शक्तियां दिये देता हूं। तुम उनका अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए उपयोग करोगे। वे तभी कारगर होंगी। तुम जिसे अपना मालिक मान लोगे, वह तुमसे जितना भी काम करने को कहेगा तुम आसानी से कर सकोगे।" और यह कहकर साधु ने शीतल के सर पर अपना हाथ रखा और कोई मंत्र पढ़ा। फिर उसने शीतल को आशिष देकर वहां से रवाना कर दिया।

शीतल वहां से लौट आया। रास्ते में एक गांव पड़ता था। वह वहीं एक घर के सामने रुक गया और उसने उस घर के मालिक से कुछ काम मांगा। उस घर का मालिक बड़े टेढ़े मिजाज़ का व्यक्ति था। झल्ला कर बोला, "तुम क्या वह काम कर पाओगे? मेरे घर के पिछवाड़े रहे तालाब का समूचा पानी क्या तुम पी सकते हो?"

शीतल ने तुरंत "हां" में अपना सर हिला दिया और उस घर के पिछवाड़े की ओर बढ़ गया। घर का मालिक हैरत में पड़ गया। देखते ही देखते शीतल उस तालाब का सारा पानी पी गया था।

अब तो उस घर के मालिक की हैरत का कोई ठिकाना न था। वह दुगुनी हो गयी थी। तालाब में घर के मालिक को एक रत्न का कंकण दिखाई पड़ा। उसे देखकर वह बोला, "मेरा पुराना नौकर बराबर यही कहता रहा कि रत्न तालाब में गिर गया है। लेकिन मैंने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया और उसे नौकरी से हटा दिया। उसके बराबर विश्वासपात्र नौकर मिलना मुश्किल है। बेशक, तुम तालाब का पानी देखते ही देखते पी गये। अब तुम्हारे जैसे आदमी को मैं और कौन-सा काम दूं। खैर, अभी तो मैं उसी पुराने नौकर को वापस बुला रहा हूं।"

शीतल ने सोचा, अगर काम बनते-बनते रुक गया है तो इसका कारण उसका दुर्भाग्य

ही है। इसलिए वह वहां से और आगे बढ़ गया, और एक दूसरे गांव में पहुंचकर उसने वहां के एक बहुत बड़े अमीर से नौकरी के लिए प्रार्थना की। उस अमीर का नाम रामप्रसाद था।

रामप्रसाद भारी कंजूस था। उसे तो शीतल जैसा आदमी चाहिए ही था। उसने फौरन उससे अपने समूचे घर की सफाई करवा डाली। उसमें उस घर का पिछवाड़ा भी शामिल था। वह शीतल की क्षमता देखकर ताज्जुब में पड़ गया था। शीतल कठिन से कठिन काम बड़ी आसानी से किये जा रहा था। बहरहाल, इस पर भी रामप्रसाद को संतोष नहीं हुआ। उसने उसे आदेश दिया कि वह गांव के हर घर के लिए लकड़ियां काट कर लाये, गांव के लोगों के कपड़े धोये और वे उसे जो भी काम कहें, उसे तुरंत करे। इसके बदले में उसने गांव के लोगों से पैसा वसूलना शुरू कर दिया। पर इस सब के बावजूद शीतल का पेट खाली ही रहता था। उसे पेट भर खाना भी नहीं मिलता था।

शीतल ने रामप्रसाद से कई बार कहा कि उसे भरपेट खाना चाहिए और साथ में वेतन भी, लेकिन रामप्रसाद धीमे से मुस्करा कर उसकी बात टाल जाता और कहता, "तुम एक शापग्रस्त व्यक्ति हो। शापग्रस्त व्यक्ति की, जैसी देखभाल होनी चाहिए, वैसी मैं कर रहा हूं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम मेरे आदेश का पालन करो।"

रामप्रसाद का रवैया देखकर शीतल को लगा कि यहां वह ऐसे ही छटपटाता रहेगा,

उसे किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए वह वहां से अपने गांव में वापस आ गया और उसने प्रभात को वह सब कह सुनाया जो उस पर बीता था।

शीतल की बात सुनकर प्रभात खुश हुआ और उससे बोला, "तुम्हारे पास जब दिव्य शक्तियां हैं तो तुम किसी ऐरे-गैरे की सेवा क्यों करते हो? मेरी बेटी से शादी कर लो और उसे अपना मालिक मान कर उसकी हर इच्छा की पूर्ति करो। इससे तुम भी सुखी रहोगे और मेरे दिन भी फिर जायेंगे।"

और इस तरह श्यामा और शीतल की शादी हो गयी। तब शीतल ने श्यामा से कहा, "तुम मेरी मालकिन हो। तुम मुझे आदेश दो। मैं मुश्किल से मुश्किल काम भी कर डालूंगा।"

शीतल की बात सुनकर श्यामा लजा गयी। कहने लगी, "यह आप क्या कहते हैं, मैं आपकी पत्नी हूं। आदेश मुझे आप देंगे। हुकूमत मुझ पर आप चलायेंगे। यही परंपरा रही है। मुझे प्यार से आप जो कुछ भी देंगे, मैं उसी से खुश रहूंगी। आप मेरे जीवन के मालिक हैं। आप किसी के अधीन सेवक बन कर काम न करें। अपना स्वतंत्र जीवन बितायें। मुझे इसी में खुशी मिलेगी। मैं हर तरह से आपके साथ हूं।"

जब श्यामा ने शीतल को अपना मालिक कहा तो उसके भीतर खुशी की लहर दौड़ गयी। उसे अपने पर कुछ गर्व भी हुआ। उस दिन से उसने अपना सीधापन छोड़ दिया। वह कड़ी मेहनत करके खासा कमाने लगा। देखते ही देखते वह एक धनवान व्यक्ति बन गया। श्यामा उसे हर तरह से सहयोग देती। शीतल का जीवन अब पूरी तरह से सुःख से भर गया था।

शीतल के अनुभव ने अब एक बात और स्पष्ट कर दी थी कि दिव्य शक्तियों के सहारें एक सेवक के रूप में जीने की अपेक्षा कड़ी मेहनत करके आत्मसम्मान के साथ स्वतंत्र रूप से जीना कहीं अधिक आनंददायक है।

वानर वीरों ने प्रहस्त का डटकर सामना किया। दोनों तरफ भारी संख्या में जानें गयीं। प्रहस्त के साथ उसके चार सहनायक भी थे। वे बुरी तरह वानरों का वध कर रहे थे। यह देखकर द्विविध नाम के वानर वीर को बहुत गुस्सा आया। उसने चट्टान के आकार का बड़ा पत्थर उठाया और प्रहस्त के एक सहनायक नरांतक पर दे मारा। नरांतक उस पत्थर के नीचे दब गया जिससे उसकी उसी क्षण मृत्यु हो गयी। इसी प्रकार दुर्मुख नाम के एक वानर वीर ने समुन्नत का काम तमाम किया। जांबवान ने महानाद को और तार ने कुंभहनु को पार लगाया। इस तरह प्रहस्त के चारों सहनायक इस युद्ध में काम आये।

प्रहस्त यह सब कुछ अपनी आंखों से देख रहा था। उसके क्रोध की कोई सीमा न थी। वह अंधाधुंध वानर सेना का विध्वंस करने लगा। नील ने जब यह देखा तो वह तुरंत प्रहस्त के सामने आ डटा। वह भी एक भारी शिला उठाये हुए था। उधर प्रहस्त बाण पर बाण छोड़ रहा था। उन बाणों ने नील को बींध दिया था। फिर उसने प्रहस्त के धनुष पर प्रहार करके उसके भी टुकड़े कर दिये। अब प्रहस्त और नील, दोनों ही मल्ल-युद्ध पर उतर आये थे। नील ने एक ऐसा करारा वार किया जिससे प्रहस्त का सर एक चट्टान से जा टकराया और फट गया।

बाकी राक्षसों ने जब देखा कि उनके

सेनानायक की यह गत हुई है, तो वे प्रलाप करते हुए लंका नगरी की ओर दौड़ पड़े । लंका में पहुंच कर उन्होंने रावण को प्रहस्त के वध की खबर दी । खबर सुनते ही रावण का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा । उसने तुरंत निर्णय लिया कि युद्ध के लिए अब वह स्वयं प्रस्थान करेगा । इसलिए उसने आदेश दिया कि उसका रथ तैयार किया जाये । श्रेष्ठ अश्वों से जुते रथ पर चढ़कर वह युद्ध के मैदान की ओर बढ़ चला ।

वह जैसे ही नगर के प्राचीर से बाहर आया, उसे भारी संख्या में वानर सेना दिखाई दी । तमाम वानर बड़ी-बड़ी शिलाएं और पेड़ उठाये हुए थे । रावण जैसे ही आगे बढ़ा, राम की दृष्टि उस पर पड़ी । उन्होंने विभीषण से पूछा, "यह व्यक्ति कौन है जिसके साथ अपार सेना है और जिसके रथ पर विशिष्ट प्रकार का ध्वज फहरा रहा है? दूसरे रथों पर कौन लोग हैं?"

विभीषण ने अब राम को एक-एक रथारोही का परिचय दिया । एक रथ पर अकंपन था । वह रावण का पुत्र था- दूसरे रथ पर इंद्रजित् था । एक और रथ पर अतिकाय था । महोदर भी अपने रथ पर सवार था । रावण का रथ बाकी सब रथों से अलग दिखाई दे रहा था- रावण के साथ पिशाच, त्रिशुर, कुंभ और निकुंभ जैसे राक्षस थे । रावण का तेज अद्वितीय था । राम उसे देखकर चकित हुए । वह तुरंत युद्ध के लिए तैयार हो गये । लक्ष्मण भी वहीं उन्हीं के पास युद्ध के लिए तैयार खड़ा था ।

रावण निर्भय होकर आगे बढ़ता ही चला आ रहा था । ऐसे निर्भय होकर बढ़ते आने वाले रावण को सबसे पहले सुग्रीव ने ललकारा । लेकिन रावण का बाण बहुत सक्षम था । उसने एकाएक सुग्रीव को अचेत कर दिया । सुग्रीव का अचेत होना था कि राक्षस विजयोल्लास से नाद कर उठे ।

रावण आगे बढ़ता ही आ रहा था । अब उसका सामना गवाक्ष, गवय, ऋषभ, ज्योतिर्मुख और नभ जैसे वानर वीरों ने एक साथ मिलकर किया । उन सब ने बड़ी-बड़ी शिलाएं उसकी ओर फेंकीं । रावण ने अपने बाणों से उन सब शिलाओं को नाकाम कर दिया । इससे वे वानर वीर

भयभीत हो गये और लपक कर राम की शरण में जा पहुंचे ।

रावण वानर सेना का बुरी तरह वध कर रहा था । राम से अब रहा नहीं गया । वह अपने साथियों की रक्षा के लिए आगे बढ़े । यह देखकर लक्ष्मण ने उनसे अनुरोध किया कि रावण को समाप्त करने का अवसर उसे दिया जाये । राम ने उसे अनुमति दे दी, लेकिन साथ ही उसे सावधान भी कर दिया ।

अब लक्ष्मण रावण की ओर बढ़ा । हनुमान ने जब लक्ष्मण को रावण की ओर बढ़ते देखा तो उसने तुरंत लक्ष्मण से आगे होकर अपना दायां हाथ ऊपर उठाया और रावण को संबोधित करते हुए बोला, "तुमने देव, दानव, यक्ष, गंधर्व और राक्षसों पर विजय पायी है । बेशक, यह सच है । लेकिन वानरों को जीतना तुम्हारे लिए आसान नहीं । मैं अभी इसी क्षण अपने हाथ से तुम्हारी जान लेने जा रहा हूं ।"

हनुमान की ललकार सुनकर रावण आगबबूला हो उठा और बोला, "हे हनुमान, तुम निर्भय होकर मुझ पर वार करो । यदि तुम विजयी रहे तो तुम्हारी कीर्ति चारों दिशाओं में फैलेगी, और यदि तुम मेरे प्राण न ले सके तो मैं तुम्हारे प्राण ले लूंगा ।"

"एक बात याद करो । तुम्हारा पुत्र, अक्ष, मेरे हाथों अपनी जान गंवा चुका है ।" हनुमान ने अपनी पहले वाली ललकार भरी आवाज में कहा । रावण अब अपने को रोक न सका । उसने तुरंत हनुमान की छाती

पर अपनी मुष्टि से वार किया । यह वार बड़ा करारा था, जिससे हनुमान विचलित तो उठा । अब उसने भी रावण की छाती पर ज़ोर से अपने हाथ से प्रहार किया । यह प्रहार इतना ज़बरदस्त था कि रावण बुरी तरह हिल गया ।

रावण जब प्रकृतिस्थ हुआ तो उसने हनुमान के पराक्रम की प्रशंसा की । लेकिन हनुमान इससे और उत्तेजित हो उठा । बोला, "हे रावण, इसे तुम मेरा पराक्रम कहते हो । मैं इसे पराक्रम तब समझता जब इस प्रहार से तुम्हारे प्राण उड़ जाते । चलो, तुम मुझ पर एक बार और करो । तब मैं तुम्हें अपना पराक्रम दिखाऊंगा ।"

रावण क्रोध से तो उबल ही रहा था,

उसने एक बार फिर अपनी मुष्टि से हनुमान की छाती पर प्रहार किया । यह प्रहार इतना तीव्र था कि हनुमान का सर घूम गया । रावण ने सोचा, चलो जब तक हनुमान स्वस्थ होता है, तब तक वह नील से निबट लेता है ।

नील तो वानरों का सेनानायक था । रावण के बाण जब उसे परेशान करने लगे तो उसने क्रोध में आकर एक गंडशिला रावण पर दे मारी । इस बीच हनुमान संभल चुका था । वह फिर रावण की ओर बढ़ा और उसे ललकारते हुए बोला, "किसी और से बाद में भिड़ना, पहले मेरा ऋण तो चुकाते जाओ ।"

रावण पर नील ने जो गंडशिला चलायी थी, उसे उसने अपने बाणों से भेदकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये । फिर उसने नील पर एक आग्नेयास्त्र छोड़ा जिससे नील मूर्छित हो गया ।

इस बीच लक्ष्मण ने रावण को ललकारा, "हे राक्षसराज, इन वानरों से क्या लड़ते हो? मेरे साथ युद्ध करो ।"

रावण ने भी उसी प्रकार हुंकार भरी और बोला, "लक्ष्मण, लगता है तुम्हारी आयु अब समाप्त हो गयी है । इसीलिए तुम मेरे सामने आये हो । मैं तुम्हे इसी क्षण यमलोक भेजे देता हूं ।"

लक्ष्मण की ललकार पहले के समान ही थी । उसने कहा, "हे पापी रावण, आत्मश्लाघा तुम्हें शोभा नहीं देती । मैं तुम्हारी शक्ति और वीरता से अच्छी तरह परिचित हूं । तुम युद्ध करने आये हो तो युद्ध करो ।"

लक्ष्मण का इतना कहना था कि रावण ने उस पर बाणों की बौछार शुरू कर दी । इधर लक्ष्मण ने भी बड़ी स्फूर्ति से बाण छोड़े जिससे रावण के बाण निरस्त होते गये । दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ । लक्ष्मण संभवतया रावण का बाण लगने से मूर्छित हो गया । यह देखकर रावण लक्ष्मण की ओर बढ़ा और उसने उसे अपने हाथों में उठाने की कोशिश की । वह लक्ष्मण को उठाने जा ही रहा था कि हनुमान ने वहां पहुंचकर अपनी पूरी शक्ति से रावण की छाती पर अपनी वज्र जैसी मुष्टि से प्रहार

किया । यह प्रहार इतना भीषण था कि रावण संभल नहीं पाया और मुंह के बल जा गिरा । उसके मुंह, कान और आंखों से खून की धराएं फूट पड़ीं । इससे हनुमान को मौका मिल गया । उसने मूर्छित लक्ष्मण को तुरंत अपनी भुजाओं में उठाया और उसे लेकर राम के पास जा पहुंचा ।

थोड़ी देर बाद लक्ष्मण और रावण दोनों होश में आ गये । रावण फिर से युद्ध के लिए तैयार था ।

अब युद्ध राम और रावण के बीच था । हनुमान ने राम को अपने कंधों पर बिठा लिया ताकि राम रथ पर सवार रावण का अच्छी तरह मुकाबला कर सकें ।

रावण ने पहले राम के वाहन बने हनुमान पर ही अपने बाण छोड़े । बाणों का लगना था कि हनुमान का तेज उनसे और बढ़ गया । उधर राम भी पूरी तरह से उत्तेजित थे । उन्होंने अपने बाणों की ऐसी वर्षा की कि रावण के रथ के पहिये, उसके रथ के घोड़े, ध्वज, छत्र और सारथी, सब एक के बाद एक धराशायी होते गये । फिर राम ने एक बाण ऐसा छोड़ा जो सीधा रावण की छाती में घुस गया । इससे रावण का संतुलन एकदम बिगड़ गया । साथ ही रावण बेसुध होते हुए गिर पड़ा ।

अब राम ने एक अर्धचंद्राकार बाण छोड़ा जिससे रावण के मुकुट के टुकड़े-टुकड़े हो गये । फिर वह रावण की ओर देखते हुए बोले, "तुमने अनेक वीरों का वध किया है, लेकिन मैं अभी तुम्हारा वध नहीं करूंगा । तुम जाओ और विश्राम करो । जाओ, कल युद्ध के लिए फिर तैयार होकर आना ।"

कुछ देर बाद रावण की सुध लौट आयी थी, और राम के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे । वह लौट गया ।

लंका में पहुंचकर रावण को राम के बाणों की याद आयी । वह पूरी तरह से भयभीत हो उठा था । आखिर वह अपने निकट के सलाहकारों से बोला, "मैंने इंद्र का मुकाबला किया । मैंने इतना महान तप किया । लेकिन वह सब बेकार रहा । मुझे आज एक मनुष्य के हाथों पराजय का मुंह देखना पड़ा । इस समय तुम में से कुछ कुंभकर्ण के यहां जाओ और उसे नींद से जगाओ ।"

कुंभकर्ण युद्ध के शुरू होने से नौ दिन पहले ही सोया था। रावण को विश्वास था कि अगर वह जग गया तो वह एकदम से युद्ध का स्वरूप बदल देगा। उसे राम और लक्ष्मण का वध करते भी देर नहीं लगेगी, क्योंकि उसकी शक्ति अपार है, और उस पर कोई एसा-वैसा शाप भी नहीं है।

रावण से आज्ञा लेकर कुछ राक्षस अपने साथ चंदन, फूलमालाएं और खाद्य पदार्थ लेकर कुंभकर्ण के यहां पहुंचे। कुंभकर्ण का महल बहुत विशाल था। जिस कक्ष में वह लेटा हुआ था, वह भी बहुत विशाल था। जो राक्षस वहां रावण की ओर से पहुंचे थे, उन्हें काफी संकट का सामना करना पड़ रहा था। कुंभकर्ण का श्वास-प्रश्वास इतना तीव्र था कि वे उसके वेग से धकियाये-से अनुभव कर रहे थे।

कुंभकर्ण अकुंठित पर्वत के समान पड़ा था। उसकी नींद इतनी गहरी थी कि उसे जगा पाना कोई आसान काम नहीं था, बल्कि एक तरह से यह असंभव ही लगता था। फिर भी उस असंभव कार्य को संभव बनाने के लिए वे राक्षस आगे बढ़े। सबसे पहले उन्होंने उसके निकट मांस का एक ढेर लगा दिया। फिर वहीं उसी मांस के ढेर के पास शराब के बड़े-बड़े हंडे रखे गये। अब उसके शरीर पर चंदन लगाया जा रहा था और उसे फूल-मालाओं से सजाया जा रहा था।

जब वे यह सब कुछ कर चुके, तो उन्होंने बड़े ज़ोर से शंखनाद करना शुरू किया। उनमें से कुछ अपनी पूरी शक्ति से चीख रहे थे। कुछ उस पर चढ़कर उसे रौंदने-से लगे। कुछ ने उसे लुढ़काने की कोशिश की। कुछ ने भेरियों की प्रतिध्वनियां कीं। लेकिन कुंभकर्ण नहीं जगा। अब राक्षसों के पास कोई चारा न रहा। उन्होंने तरह-तरह के अस्त्र उसके शरीर में चुभोने शुरू कर दिये। लेकिन परिणाम फिर भी नहीं मिला। राक्षस जब पूरी तरह लाचार हो गये तो उन्होंने कई प्रकार के पशुओं को उस पर छोड़ दिया। उन पशुओं में घोड़े, हाथी, ऊंट सभी कुछ शामिल थे। उसके कानों तथा उसकी नासिकाओं में पानी डाला गया।

आखिर कुंभकर्ण की नींद टूटी। जैसे ही उसने आंखें खोलीं, उसे बड़े ज़ोरों की भूख
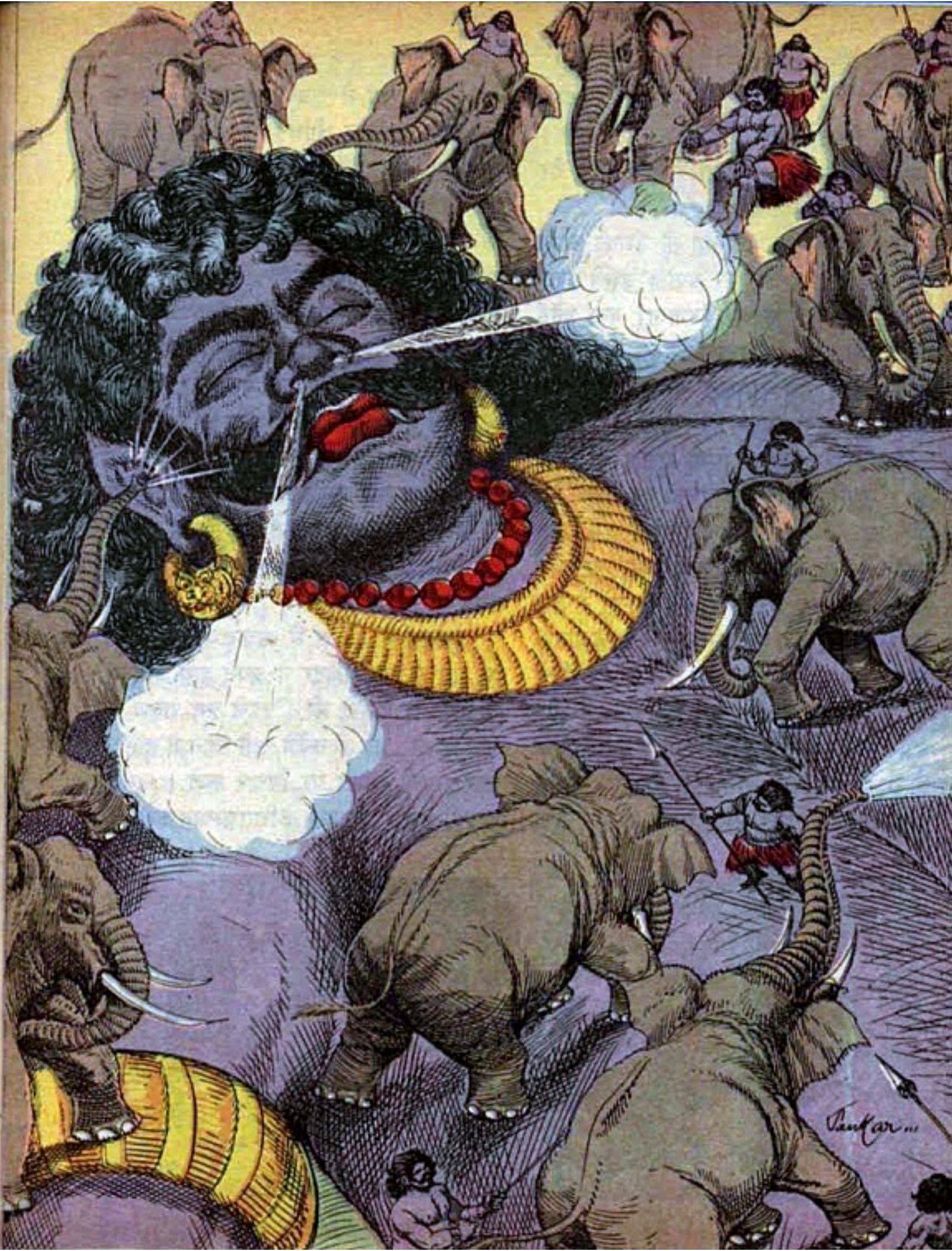
सताने लगी। उसने जब नज़र घुमा कर देखा तो पास ही उसे मांस और मदिरा रखे दिखे। वह तुरंत उन पर टूट पड़ा और कुछ ही देर में उस सब को चट कर गया।

जब उसका पेट भर गया तो उसका ध्यान वहीं खड़े राक्षसों की ओर गया। उसने प्रश्न किया, "तुमने मुझे क्यों जगाया? क्या कोई विपत्ति आन पड़ी है? रावण तो कुशल है न?" लेकिन उसे यह समझते देर न लगी कि कुछ-कुछ अनिष्ट हुआ ज़रूर है।

वहां पर रावण का मंत्री यूपाक्ष भी खड़ा था। उसने कुंभकर्ण के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा, "कुंभकर्ण, इससे पहले हमें कभी किसी देव या दानव से किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं रहा। लेकिन अब मनुष्यों से हमें खतरा हो गया है। पर्वत-समान विशाल वानरों ने लंका नगरी को घेर रखा है। रावण सीता को उठा लाया था। उससे राम कृद्ध है और लंका के लिए विपदा बन गया है। पहले एक वानर ने लंका को आग लगा दी थी। उसने अक्ष कुमार का सेना समेत संहार भी कर दिया था। अब राम ने रावण को युद्ध में परास्त कर उसे इसलिए जीवित छोड़ दिया है कि कल वह नये सिरे से युद्ध करे। यह सब उसने उसे लज्जित करने के लिए किया है। रावण के साथ जो देव, दैत्य और दानव न कर पाये, वह राम ने कर दिखाया है।"

युद्ध में अपने भाई की पराजय की बात सुनकर कुंभकर्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह यूपाक्ष से बोला, "तुम चिंता मत करो, मैं अभी युद्ध क्षेत्र में पहुंचकर वानर सेना को नष्ट किये देता हूं। मैं राम-लक्ष्मण का भी सफाया कर दूंगा। यह सब करने के बाद ही मैं रावण से मिलने जाऊंगा। वानरों का मांस मैं राक्षसों को खिलाऊंगा और राम-लक्ष्मण का मांस मैं स्वयं खाऊंगा।"

कुंभकर्ण ने आवेश में आकर जो कुछ कहा था उसे सुनकर महोदर ने अपने हाथ जोड़कर कुंभकर्ण से विनती की, "पहले तुम रावण के पास जाओ। वह जो कहेंगे, उसे ध्यान से सुनो। फिर समूची स्थिति पर विचार करो। उसके बाद ही शत्रु से युद्ध करने के लिए प्रस्थान करो।"

सब से प्यारी चीज़

एक गांव में एक विधवा रहती थी। उसके एक ही बेटा था। वह बहुत सीधा था, और सीधा होने के साथ-साथ भोला भी था। इसीलिए सब उसे भोलानाथ कहकर पुकारते थे।

अपने बेटे के भोलेपन से वह विधवा अच्छी तरह परिचित थी। इसलिए वह हमेशा उसकी बड़ी सावधानी से देखभाल करती। भोलानाथ को अपनी इस मंदबुद्धि पर अक्सर चिंता हो आती। वह कहता, "कितना अच्छा होता, मां, अगर मेरा थोड़ा-सा दिमाग और रहता।"

भोलानाथ की मां उसे बराबर सांत्वना देने की कोशिश में रहती। लेकिन इससे भोलानाथ को संतोष न होता। वह हमेशा एक ही रट लगाये रहता।

बेटे द्वारा इस तरह परेशान किये जाने पर मां एक बार कह उठी, "जाओ, काली पहाड़ी पर एक जादूगरनी रहती है। उसका नाम जृंभिका है। तुम उसी से थोड़ा-सा दिमाग मांग लाओ।"

भोलानाथ को अपनी मां का सुझाव बहुत अच्छा लगा। वह खुशी-खुशी काली पहाड़ी पर रहने वाली उस जादूगरनी के पास गया। जादूगरनी उस समय चूल्हे पर खाना पका रही थी। उसे देखकर भोलानाथ बोला, "जादूगरनी फूफीं, मैं बिलकुल भोला हूं। मैं अपनी मां के किसी काम नहीं आ पाता। मेरी मांने कहा है कि मैं तुमसे थोड़ा दिमाग मांग लाऊं। उसने यह भी कहा था कि तुम मेरे जैसे लोगों को दिमाग दे सकती हो। मुझे बस थोड़ा-सा ही चाहिए।"

जादूगरनी जृंभिका ने भोलानाथ को एक बार सर से पांव तक देखा। फिर उसे परखते हुए बोली, "ठीक है, पहले तुम मुझे वह चीज़ लाकर दो जो तुम्हें सबसे प्यारी

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

है । तब मैं तुम्हें थोड़ा-सा दिमाग दे दूंगी ।"

भोलानाथ अपने घर लौट आया । घर लौटकर उसने जृंभिका वाली बात अपनी मां को बतायी और कहने लगा, "मां, मुझे बताओ, मुझे सबसे ज़्यादा प्यारा कौन है?"

भोलानाथ की मां को उत्तर देते देर न लगी । कहने लगी, "अरे भोलेनाथ, तुम्हें इतना भी पता नहीं? तुम्हें मुर्गे का मांस सबसे ज्यादा प्यारा है । कल तुम जृंभिका के यहां एक मुर्गा ले जाना और उसके बदले में उसके यहां से दिमाग ले आना ।"

अगले दिन वह वाकई एक तगड़ा मुर्गा लेकर जृंभिका के यहां जा पहुंचा और उससे कहने लगा, "फूफी, यही मुझे सबसे ज़्यादा प्यारा है । तुम इसे ले लोऔर मुझे थोड़ा-सा दिमाग दे दो ।"

"ठीक है पहले मैं यह पता लगाऊंगी कि तुम सच कह रहे हो या यूं ही बात बना रहे हो । हां, मुझे एक सवाल का जवाब भी चाहिए । मुझे बताओ कि वह कौन-सी चीज़ है जो बिना पैरों के दौड़ती है?" जृंभिका ने ऐसे ही कह डाला ।

भोलानाथ वहीं खड़े-खड़े अपना सर खुजलाता रहा, उसे कोई उत्तर नहीं सूझा ।

"इसका मतलब तो यह हुआ कि तुमने मुझे अपनी सबसे प्यारी चीज़ नहीं दी । अब तुम लौट जाओ, और वही चीज़ लेकर आओ जो तुम्हें सबसे ज़्यादा प्यारी है," और यह कहकर जृंभिका ने उसे वापस भेज दिया ।

भोलानाथ जब घर वापस आया तो उसकी मां खाट पकड़े हुए थी । पड़ोस की कई औरतें उसके इर्द-गिर्द बैठी थीं, और उसकी सेवा-सुश्रूषा में लगी थीं । उनसे पूछने पर वे बोलीं, "तुम्हारी मां लकवे की शिकार हो चुकी है । वैद्यों ने उसकी अच्छी तरह जांच की है, लेकिन उसका कोई फायदा नहीं हुआ ।"

भोलानाथ की मां की जब अपने बेटे पर नज़र पड़ी तो उसने उसे अपने पास बुलाया और कहने लगी, "बेटा, अब मैं ज़िंदा नहीं रहूंगी । जृंभिका ने तुम्हें दिमाग दे दिया है न । मुझे खुशी है कि अब तुम अपने पांवों पर खड़े हो सकते हो । मैं अब निश्चिंत होकर जा रही हूं ।" और इन्हीं शब्दों के

साथ उसने अपने प्राण त्याग दिये ।

उस रोज़ तमाम रात भोलानाथ अपनी मां का सर अपनी गोद में रखकर आंसू बहाता रहा । उसे यही चिंता खाये जा रही थी कि वह मां के बिना कैसे जियेगा? उसका हाल-चाल कौन पूछेगा? उसकी ज़रूरतें कौन पूरी करेगा? इन्हीं सब सवालों का तांता उसके मन में लगा हुआ था । उनके बारे में सोचते-सोचते उसे एकदम ज्ञान हुआ कि इस दुनिया में उसकी सबसे प्यारी चीज़ उसकी मां है ।

इस पर उसने अपनी मां की मृत देह एक बोरे में बांधी और उसे जृंभिका के यहां ले गया, और उससे बोला, "इस दुनिया में मुझे जो सबसे ज़्यादा प्यारा है उसे मैं ले आया हूं । अब मुझे थोड़ा-सा दिमाग दे दो, मेरी अच्छी फूफी ।"

"मुझे तुम्हारी बात की सच्चाई परखनी होगी । मुझे इस पर यकीन नहीं हो रहा । बताओ, क्या सोने से भी बढ़कर कोई प्यारी चीज़ हो सकती है?" जृंभिका ने भोलानाथ से प्रश्न किया ।

भोलानाथ फिर सोचने लगा और जब उसे कोई जवाब नहीं सूझा तो कह उठा, "नहीं, मैं नहीं जानता ।"

इस पर जृंभिका ने उसे रफा-दफा हो जाने को कहा और बोली, "जाओ, इससे भी कोई प्यारी चीज़ लेकर आओ ।"

भोलानाथ अपनी मां की लाश वाले बोरे के साथ घर लौट पड़ा । रास्ते में वह

एक जगह बैठ गया और फिर अपनी हालत पर ज़ार-ज़ार रोने लगा ।

तभी उससे किसी ने प्रश्न किया, "क्यों रे, रोता क्यों है?"

भोलानाथ ने मुड़कर देखा । वहां एक लड़की खड़ी थी । उसने अपना नाम राधा बताया । उसे देखकर भोलानाथ उसे अपनी राम कहानी सुनाने लगा ।

भोलानाथ की बात सुनकर राधा हंस पड़ी । उसे पता चल गया था कि उसकी मां अब नहीं रही और जृंभिका ने भी उसके साथ ठीक बर्ताव नहीं किया । उससे थोड़ा-सा दिमाग प्राप्त न कर सकने के कारण भोलानाथ ने अपना दुःख जताया । वह फिर हंसने लगी और बोली, "जृंभिका के उस

प्रश्न का उत्तर है नदी । नदी ही बिना पैरों के दौड़ती है । रहा सोने का सवाल तो उससे भी बढ़िया है, सूरज । देखो उसमें कितनी चमक है । पर अगर तुम्हें यह सब पता नहीं, तो ज़रूर किसी को तुम्हारी देखभाल करनी पड़ेगी । तुम्हारी देखभाल अब मैं ही करूंगी । सुना है भोले-भाले लोग अपनी पत्नियों से ढेर-सारा प्यार करते हैं । क्या तुम शादी के बाद मुझसे प्यार करोगे?''

''मुझे मंजूर है, यदि तुम्हें कोई एतराज़ न हो तो,'' भोलानाथ ने सहज ही उत्तर दे दिया ।

फिर राधा और भोलानाथ की शादी हो गयी । राधा अब उसकी मां से भी बढ़कर उसकी देखभाल करती थी, और यह प्यार आपस में बढ़ता ही जा रहा था ।

एक दिन भोलानाथ को ज्ञान हुआ कि उसकी पत्नी से बढ़कर उसके लिए और कोई प्यारी चीज नहीं है । इसलिए वह अपनी पत्नी के साथ जृंभिका जादूगरनी के यहां जा पहुंचा और उस से बोला, ''फूफी, मेरी पत्नी से बढ़कर मेरे लिए और कोई चीज़ प्यारी नहीं है ।''

जृंभिका ने उन दोनों की ओर ध्यान से देखा और प्रश्न किया, ''पहले मुझे इसका उत्तर दो-वह कौन-सी चीज़ है जो पैदा तो बिना पैरों के होती है, और फिर दो पैर पाती है, और फिर उसके चार पैर हो जाते हैं?''

भोलानाथ पहले की तरह फिर अपना सर खुजलाने लगा । इस पर राधा अपना मुंह उसके कान के पास ले गयी और बोली, ''मेंढक ।''

भोलानाथ ने जृंभिक को उसी तरह उत्तर दे दिया, ''मेंढक ।''

''अब समझी । माना तुम्हारी खोपड़ी में दिमाग कम है, पर तुम्हारी पत्नी यह कसर पूरी कर देगी । इसलिए तुम अपनी पत्नी से दिमाग बांट लो और सुख-शांति से रहो ।'' और यह कहकर जृंभिका ने उन्हें आशीर्वाद दिया और घर लौट जाने को कहा ।

कुशल वैद्य

चंद्रकांत ने नया-नया वैद्यक का पेशा शुरू किया था ।

एक बार उसके पास छूत की बीमारी का एक रोगी आया । उसे दवा देकर उसने चलता किया, लेकिन स्वयं वह सर से पांव तक कांपने लगा । "अभी-अभी जो मरीज़ आया था, वह छूत का रोगी था । मुझे डर है कि उस रोग ने मुझे पकड़ लिया है," चंद्रकात ने अपनी पत्नी से कहा ।

चंद्रकांत बस इतना ही कह पाया । उसका गला रुंध गया था और उसकी आवाज़ जाती रही थी । चंद्रकांत की पत्नी सुनंदा के हाथ-पांव फूल गये और वह फौरन चंद्रकांत के मामा श्रीनाथ के पास दौड़ी गयी ।

श्रीनाथ उस गांव का नामी वैद्य था । चंद्रकांत ने उसी से वैद्यक सीखी थी । सुनंदा की बात सुनकर श्रीनाथ फौरन चंद्रकांत को देखने चला आया । उसकी नब्ज़ देखकर उसने सुनंदा से कहा, "यह तो पूरी तरह स्वस्थ है । इसे किसी प्रकार की कोई छूत की बीमारी नहीं है । दो दिनों के लिए इसे करेले की सब्जी, करेले की चटनी और करेले का अचार भोजन में परोस कर दो, और पानी की जगह भी इसे करेले का रस पिलाओ । यही इसका इलाज है ।"

सुनंदा ने वैसा ही किया जैसा कि श्रीनाथ ने बताया था । वह जब पति को खाना परोसने लगी तो श्रीनाथ करेले को विभिन्न रूपों में देखकर झल्ला उठा, और बोला, "यह सब क्या है? क्या मैंने कभी जिंदगी में करेले की तरकारी खायी है?"

पति को इस तरह चिल्लाते देखकर सुनंदा बिलकुल परेशान नहीं हुई, बल्कि बोली, "ओह, तो चिकित्सा के बिना ही आपकी आवाज़ वापस आ गयी । आपके मामा ने जो कहा था वह ठीक ही था ।"

वसुधा गुप्त

चंद्रकांत को अब चिकित्सा के एक और पेंच का पता चला । जो चीज़ें किसी को नापसंद हों, उन्हें देखकर मस्तिष्क में कुछ ऐसा दौड़ता है कि बिन चिकित्सा के ही रोगी ठीक हो जाता है ।

तब उसने अपनी पत्नी सुनंदा से कहा, "तुम लक्ष्मीकांत के घर जाओ और उसकी पत्नी से इधर-उधर की बातें करते हुए यह पता लगाओ कि लक्ष्मीकांत के पिता को कौन-सी चीजें नापसंद हैं । यह बहुत ज़रूरी है । लक्ष्मीकांत का पिता इसी प्रकार के रोग से पीड़ित होकर मेरे पास आया था । मैं मामा जी से इस रोग की चिकित्सा के बारे में सलाह करना चाहता था, लेकिन मुझे संकोच होता रहा ।"

सुनंदा पति की बात सुनकर खुश हुई और लक्ष्मीकांत के घर के लिए चल दी । रास्ते में उसे श्रीनाथ दिखाई दे गया । उसने चंद्रकांत के बारे में पूछताछ की । सुनंदा उससे असलियत छिपा न सकी । उसने उसे सब कुछ साफ-साफ बता दिया ।

सुनंदा की बात सुनकर श्रीनाथ हंसने लगा, बोला, "मेरा यह सब अंदाज़ा ही था । मुझे लगा, असलियत जानने के लिए मुझे ऐसा ही कुछ करना चाहिए । इसीलिए मैंने ऐसी सलाह दी । चंद्रकांत को धोके की बीमारी थी । लक्ष्मीकांत के पिता को ऐसी बीमारी नहीं है । उस की असली बीमारी है । उसका इलाज दूसरा है । चलो, घर लौट चलो ।" और उसे लेकर वह अपने भांजे चंद्रकांत के यहां पहुंचा । वहां पहुंचकर चंद्रकांत को उसने खूब फटकारा और बोला, "लक्ष्मीकांत का पिता पहले मेरे पास ही आया था और मैंने चिकित्सा के लिए उससे ज़्यादा रकम मांगी थी । मैं जानता था कि वह तुम्हारे पास जायेगा, और तुम उसकी चिकित्सा किये बिना रहोगे नहीं । तुम खूब नाम कमाना चाहते हो न । तुम्हारे लिए मैं इतना कुछ करता हूं, लेकिन तुम मेरे पास इसका इलाज पूछने के लिए भी न आये । तुम्हें किसलिए इतना संकोच हो रहा था? अब तुम अपनी गलती समझ रहे हो?"

चंद्रकांत को अपनी भूल का एहसास हुआ । उसने विनम्र होकर अपने मामा से उस रोग का इलाज समझा । लेकिन मामा जैसे ही वहां से रवाना हुआ, चंद्रकांत फिर

पहले की तरह कांपने लगा ।

उसे कांपते देखकर सुनंदा बोली, "अब क्या बात है? फिर किसी तरह की झंझट में हो क्या?"

पत्नी का उपालंभ सुनकर चंद्रकांत बोला, "अभी मेरी कंपकंपी वाली बीमारी गयी नहीं । कुछ दिनों तक मसे ऐसे ही खाट पर लेटे रहना होगा । मैं, लक्ष्मीकांत के पिता को दवा भिजवा दूंगा । लेकिन और किसी मरीज़ को देखना नहीं चाहूंगा ।"

सुनंदा काफी होशियार थी । उसने हंसकर कहा, "आप घबराइए नहीं । मैं रोज़ रात को सोते समय आपको तुलसी की जड़ का चूर्ण पान के रस में मिलाकर दिया करूंगी । सुबह भी दूंगी । यदि आप इसे दोनों वक्त लेते रहें तो आपको कोई छूत की बीमारी छू नहीं पायेगी । तब आप किसी भी छूत की बीमारी वाले रोगी का इलाज कर सकते हैं । आप बेकार ही डर रहे हैं और अपने पेशे को बदनाम कर रहे हैं ।"

चंद्रकांत को आश्चर्य हुआ । उसने पूछा, "यह तुम कैसे कह सकती हो कि मैं छूत की बीमारी से डरता हूं?"

"वैद्यक के शुरू के दिनों में ऐसा ही होता है । आप के मामा जी ने यह बात मुझे बता दी थी । दूसरे, आपके विचार और आपका रवैया भी आपके मामा के जैसा है । इसलिए आप उनके अनुभवों से भरपूर लाभ उठा सकते हैं ।" सुनंदा ने संक्षेप मे उत्तर दिया ।

सुनंदा की बात सुनकर चंद्रकांत को और हैरानी हुई । उसे अब लगा कि उसे तो मामा जी के पास बराबर जाते रहना चाहिए था । उसके प्रति किसी प्रकार का संकोच मन में रखना उसकी सरासर मूर्खता थी । दरअसल, उसने तो यह सोच लिया था कि वह उनसे सब कुछ जान गया है, और उसे अब मामा की तरह खूब नाम कमाना है । अगले दिन से उसने निःसंकोच अपने मामा के यहां जाना शुरू कर दिया और जो भी उसके मन में संदेह होते, उनका निदान पाने लगा ।

अब धीरे-धीरे चंद्रकांत एक कुशल वैद्य के रूप में ख्याति पाने लगा था ।

कापालिनी

किसी ज़माने में कश्मीर में एक क्षत्रिय लड़की रहती थी। वह अकेली संतान थी। उसका नाम सीमंतिनी था। सीमंतिनी बहुत खूबसूरत थी। उसके पिता का देहांत पहले हो चुका था जिससे पिता की सारी संपत्ति, उसकी हो गयी थीं। इसलिए वहां के कई कुलीन युवक उससे शादी करना चाहते थे।

उन युवकों में गणदेव नाम का भी एक युवक था। लेकिन सीमंतिनी के मन में विवाह करने की इच्छा ही नहीं जगी थी, उसने हर प्रस्ताव को ठुकरा दिया था।

सीमंतिनी को जंगल, पहाड़, पशु-पक्षी काफी आकर्षक लगते थे। वह अक्सर पैदल चलकर या घोड़े पर सवार होकर जंगल में काफी दूर निकल जाती और गरुड़ शिखर नाम की पहाड़ी पर बैठकर प्रकृति की छटा देखा करती।

इस प्रकार प्रकृति की छटा देखते-देखते सीमंतिनी के मन में कापालिक शक्तियां प्राप्त करने की इच्छा जगी। वह बैताल को वश में करने, दूसरे की काया में प्रवेश करने, कामरूप तथा कामगमन आदि सिद्धियां प्राप्त करने के लिए विचित्र प्रकारके अनुष्ठान करने लगी। इस तरह साधना करते-करते उसे कुछ शक्तियां प्राप्त हो ही गयीं।

जब गणदेव को इस सब के बारे में पता चला तो वह बहुत दुःखी हुआ। सीमंतिनी साधारण जन से बिलकुल अलग हो गयी थी। वह जब साधारण थी, तब भी उसने उससे शादी करने से इनकार कर दिया था। अब इस हालत में वह उससे शादी कैसे करेगी? इसी बारे में वह सोचता रहता। वह चाहता था कि वह सीमंतिनी को किसी तरह पहले वाली साधारण सीमंतिनी बना ले। वह छिप-छिप कर यह देखता रहता कि सीमंतिनी कैसी पूजाएं करती है।

इसी तरह कई महीने बीत गये। गणदेव

कश्मीरी लोककथा

के मन में यह इच्छा प्रबल होती गयी कि सीमंतिनी को किसी न किसी तरह बचाना ही चाहिए । आखिर, उसने पिंगलिनी नाम की एक जादूगरनी से मदद मांगी ।

पिंगलिनी मंत्र-तंत्र में अद्‌भुत थी । वह अपने बगीचे में तरह-तरह के पेड़-पौधे उगाती और उनसे तरह-तरह की दवाइयां तैयार करती । उसने गणदेव की बांत बड़े ध्यान से सुनी और बोली, "सीमंतिनी कापालिनी बनना चाहती है । हम उसके रास्ते में रुकावट क्यों बनें?"

"क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वह कापालिनी बने ।" गणदेव ने उत्तर दिया, "तुम्हें जितना पैसा चाहिए, मैं दूंगा । बस, मैं तुमसे इतना भर जानना चाहता हूं कि क्या वह एक साधारण लड़की बन पायेगी या नहीं? मुझसे यह बर्दाश्त नहीं होगा कि इतनी सुंदर और गुणवान लड़की एक कापालिनी बने और कापालिनी की मौत मरे ।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है? तुम यह सोचते हो कि एक कापालिनी के जीवन में किसी प्रकार का आनंद नहीं होता?" पिंगलिनी ने प्रश्न किया ।

"आनंद चाहे होता हो, पर सुख नहीं होता । है न?" गणदेव ने टिप्पणी की ।

"हां, तुम्हारी यह बात तो ठीक है । उसे सुख तो तब मिलेगा जब वह तुम्हारी पत्नी बनकर जियेगी ।" पिंगलिनी ने कहा ।

"इसीलिए तो मैं तुमसे कह रहा हूं कि उसे मेरी पत्नी-योग्य बनाने का प्रयास करो ।

मैं आजीवन तुम्हारा एहसान मानूंगा," गणदेव ने कहा ।

"ठीक है, मैं तुम्हारी मदद करूंगी । पर मैं जैसा कहती हूं तुम्हें वैसा ही करना होगा । अगली अमावस के दिन तुम कुछ शिकारी कुत्तों को लेकर जंगल में शिकार के लिए निकल पड़ो । हां, किसी जानवर को मारो नहीं । अगर तुम्हें सफेद हिरणी मिल जाये तो उसे पकड़ लो । लेकिन ध्यान रहे, वह घायल न हो । फिर उसके गले में रस्सी पहनाओ और उसे अपने यहां ले जाओ । उसे एक कमरे में बंद कर दो और वहां ताला लगा दो । बाकी सब मैं खुद देख लूंगी ।" पिंगलिनी ने कहा ।"

इस तरह गणदेव को समझाकर पिंगलिनी

ने उसे विदा किया । गणदेव जब लौट रहा था तो उसकी नज़र लंगड़ाती हुई पिंगलिनी पर पड़ी ।

बहरहाल, अमावस के दिन गणदेव अपने शिकारी कुत्तों के साथ जंगल की ओर चल पड़ा । जंगल में पहुंचकर उसने सफेद हिरणी की खोज की । आखिर, जब उसे ऐसी हिरणी दिखाई दी तो उसने तुरंत अपने कुत्तों को उसके पीछे लगा दिया । हिरणी हवा से बातें करती हुई दौड़ रही थी ।

कुछ देर बाद गणदेव ने देखा कि केवल एक ही कुत्ता हिरणी के पीछे दौड़ रहा है । उसने यह भी देखा कि वह कुत्ता उसका नहीं है ।

कुत्ते को लंगड़ाते हुए देखकर गणदेव के मन में कुछ विचार आया । उस कुत्ते ने आखिर अपने मुंह से हिरणी की पिछली टांग पकड़ ली और उसे रोक लिया । गणदेव फौरन वहां पहुंचा और उसने अपने हाथ का फंदा उस हिरणी के गले में डाल दिया । उसके बाद हिरणी ने भागने की कोशिश नहीं की, बल्कि उसके पीछे-पीछे चलने लगी । जिस कुत्ते ने हिरणी को पकड़ा था, वह अब कहीं दिखाई नहीं दे रहा था ।

गणदेव उस हिरणी को अपने यहां ले गया और उसे उसने एक कमरे में बंद करके वहां ताला लगा दिया । फिर वह अपने कक्ष में जाकर सो गया ।

सुबह जब उसकी आंख खुली तो उसने भयंकर भूकंप महसूस किया । उसे लगा जैसे उसके घर पर गाज गिरी है ।

बहरहाल, हुआ कुछ नहीं । हां, इतना ज़रूर हुआ कि सीमंतिनी की सभी सिद्धियां उसे छोड़कर चली गयीं । अब गणदेव ने उस कमरे का ताला खोला जिसमें उसने हिरणी को बंद किया था । लेकिन अब वहां हिरणी नहीं थी, उसकी जगह सीमंतिनी बैठी थी । वह अब गणदेव की पत्नी बनने को तैयार थी ।

आखिर उन दोनों का विवाह हो गया और वे सुख-शांति से रहने लगे ।

प्रकृति : रूप अनेक

सौ वर्ष में एक बार

बंगलौर के विख्यात लालबाग उद्यान में सैंचुरी पॉम नाम का ताड़ का पेड़ पहली बार खिला है। ताड़ की यह विशेष किस्म, जिसे वनस्पति विज्ञान में 'कोरीफा अंबराक्यूरीफेला' कहते हैं, अपने लोकप्रिय नाम के अनुरूप सौ वर्ष की आयु पाता है, और ऐसा विश्वास किया जाता है कि मुरझाने से पहले इस पर केवल एक बार फूल लगते हैं। बंगलौर के इस ताड़ को इस शताब्दी के शुरू में लगाया गया था। कर्नाटक के दक्षिणी कैनरा के चारमुड़ी घाट के एक सैंचरी पॉम पर आठवें दशक के शुरू में फूल खिले। यह अजीब इत्तफाक है कि मॉरिशस का पांपलेमूस वानस्पतिक उद्यान इस वर्ष अपने पूरे यौवन पर है। इस ताड़ पर साठ वर्षों में एक बार फूल आते हैं।

गुलाब से तेल

क्या तुमने कभी 'नूरजहां' नाम के किसी गुलाब के बारे में सुना है? यह भारतीय गुलाब की सौ विशिष्ट किस्मों में से एक है। हाल ही में औषधीय तथा सुगंधित पौध के केंद्रीय संस्थान ने पता लगाया है कि इस खास किस्म से बुल्गेरियाई किस्म की अपेक्षा शत प्रतिशत अधिक तेल मिलता है। अब तक यही माना जाता था कि बुल्गेरियाई किस्म ही सबसे बढ़िया है। इस तेल से जो इत्र तैयार किया जायेगा, संभवतया उसका नाम भी 'नूरजहां' होगा।

Holidays are for merry - making.
Also for money - making!
A Holiday means a lot of free time. How about earning some money this year?
Here's how! An offer EXCLUSIVE for STUDENTS!
The whole thing is simple: all you have to do is to sell one annual subscription of Chandamama - any language. And there are 12 languages to choose from! The subscription is worth Rs 48. Your share is Rs 10. That is much more than what our agents get!
Sell 10 subscriptions and your purse will be heavier by Rs 100!
You can sell any number - there's no limit. The top 10 student-sales boys (girls are not excluded!) will receive Chandamama Scholarships. The next 100 will receive Chandamama T-shirts. All that is Bonus! Besides, you'll sharpen your sales skills, and develop a way with people.
Interested? Write, giving details of your school and attach 2 passport size photos. You'll then receive an identity card and subscription forms.
CHANDAMAMA
Chandamama Subscription
Promotion Cell
188, N.S.K. Salai, Vadapalani, Madras - 600 026.

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां सितम्बर, १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M.C. Morabad

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । १० जुलाई'९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) १०० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

मई १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मैंने बनाया है यह साज़!**

दूसरा फोटो : **मुन्ना सुनो भोंपू की आवाज़!!**

प्रेषक : अजय कुमार साहू, डाक्टर सामन्त के सामने, सुभाष चौक, भिलाई-३ (म.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting them in any manner will be dealt with according to law.

आओ जश्न मनाएं, गीत कैम्पको के गाएं!

"यह दूधभरी, यह क्रीमभरी, यह स्वादभरे सपनों से भरी.
यह मेरी मनभाती चॉकलेट. कैम्पको क्रीमी मिल्क चॉकलेट!"
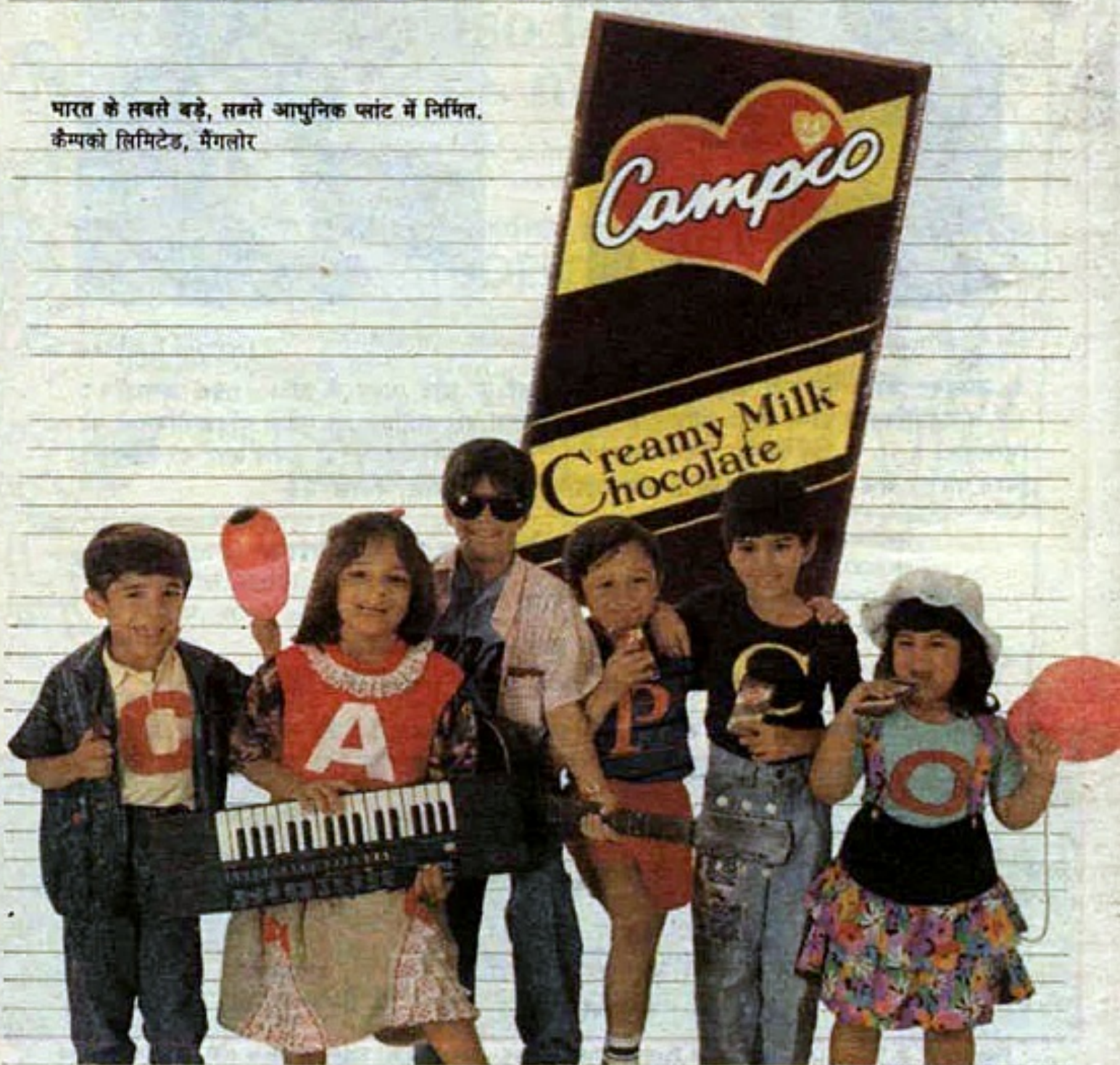
अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. 216.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. 216.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

nutrine

70 मीठी मुस्कुराहटों का राज़

nutrine

जीभर कर मुस्कुराओ

CLARION K-566 H